इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

BSOC-105
राजनीतिक समाजशास्त्र

खंड

3

राजनैतिक प्रणाली

इकाई 7
खंडीय प्रणाली **89**

इकाई 8
सर्वसत्तावाद **107**

इकाई 9
लोकतांत्रिक **124**

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 7 खंडीय संरचना प्रणाली*

इकाई की संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 राजनैतिक प्रणाली

7.3 राजनैतिक संस्थाएं और खंडीय समाज

7.3.1 खंडीय समाजों से संबंधित आकड़ों के स्रोत

7.3.2 खंडीय समाजों के प्रकार

7.3.3 राजनैतिक नियंत्रण के रूप में नातेदारी प्रणाली

7.4 खंडीय समाज के राजनैतिक सिद्धांत

7.4.1 एक उदाहरणः टोंगा समुदाय

7.4.2 एक उदाहरणः लोजी समुदाय

7.5 भारत में खंडीय समाज की जनजातियाँ

7.5.1 भारतीय जनजातियों में राजनैतिक संगठन

7.5.2 वंश प्रणाली की व्यवस्था

7.5.3 संघर्ष को नियंत्रित करना

7.5.4 अपराध और दण्ड

7.6 राजनैतिक संस्थाएँ और समाज का विकास

7.6.1 समाज में सरल प्रकार की सरकार का उदय

7.6.2 सरल समाजों में धर्म का राजनैतिक पहलू

7.7 सारांश

7.8 शब्दावली

7.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आपः

- खंडीय समाजों का वर्णन कर सकेगें;
- खंडीय समाजों की कुछ प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कर सकेगें;
- राज्यहीन के साथ – साथ खंडीय समाज और राज्य सहित समाज के बीच के अंतर को स्पष्ट कर सकेगें; तथा
- खंडीय समाजों के प्रकार्यों की व्याख्या कर सकेगें।

* प्रो. रविन्द्र कुमार ई.एस.ओ. II, खंड 5 इकाई 16 से अनुकूलित किया है।

7.1 प्रस्तावना

यह इकाई ''राजनीतिक प्रणाली'' वाले तीसरी खंड की इकाई है। इस इकाई में आपको राजनीति और राजनीतिक संगठन के बारे में जानकारी प्राप्त होगी। आपको उन खंडीय समाज के बारे में जानकारी दी जाएगी जिनमें आम तौर पर सत्ता की केंद्रीकृत प्रणाली का अभाव होता है। इनमें राजनीतिक नियंत्रण के संबंध में नातेदारी के महत्व को दिखाया गया है। हम लोगों ने यहां उन राजनीतिक प्रणाली पर चर्चा की है जो खंडीय समाजों में मौजूद हैं। हमलोगों ने भारत की खंडीय जनजातियों का भी वर्णन किया है। अंत में, हम लोगों न खंडीय समाजों में सरकार के उद्‌भव पर चर्चा किया है।

7.2 राजनीतिक प्रणाली

समाज को शासन व्यवस्था के द्वारा एकजुट रखा जाता है। राजनीतिक प्रणाली किसी भी समाज का एक विशिष्ट उपतंत्र है और राजनीतिक संस्थान तीन पहलुओं को संदर्भित करते हैंः नियंत्रण प्रणाली, नियंत्रण के लिए संगठन और नियंत्रण के लिए बल का उपयोग। ये सभी पहलू सामाजिक व्यवस्था से ही संबंधित होते हैं। इसलिए, समाजशास्त्री मानते हैं कि राजनीतिक संस्थान के तीनों पहलुओं जैसे नियंत्रण, संगठन और बल के कानूनी प्रयोग के रूप में एक वृहत्तर सामाजिक प्रणाली का एक उपतंत्र होता है। राजनीतिक संस्थाएँ प्रत्येक समाज की राजनीतिक प्रक्रिया में कुछ विशेष प्रकार के सामाजिक संबंध रखती हैं जो किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित होता है। इस प्रकार, किसी भी समाज की राजनीतिक प्रक्रिया में क्षेत्रीय पक्ष एक महत्वपूर्ण पहलू होता है। क्षेत्रीय संरचना न केवल राजनीतिक संगठन के लिए बल्कि संगठन के अन्य रूपों के लिए भी राजनीतिक रूपरेखा का आधार प्रस्तुत करती है। इवांस प्रिचर्ड और फोर्टिस (1940) के अनुसार, शारीरिक बल प्रयोग के माध्यम से राजनीतिक प्रभुता स्थापित कर क्षेत्रीय सीमा विशेष में व्यवस्था स्थापित करना एवं बनाए रखना ही राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन का विषय है। (Fortes M. and Evans, Pritchard, EE) 1949)

समाज की महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्थानों में से एक संस्था है – राज्य। इसे एक मानव समुदाय के रूप में वर्णित किया गया है जो किसी क्षेत्र विशेष के भीतर कानूनी तौर पर बल के वैध प्रयोग करने का एकाधिकार रखती है। राज्य, सरकार से इस अर्थ में भिन्न है कि सरकार वह एजेंसी है जो राज्य के आदेशों का पालन करती है। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि राजनीतिक संगठन में शक्ति और प्राधिकार को संयोजन के अलावे अंतर्संबंध भी निहित होता है जो की सार्वजनिक मामलों के संरक्षण में भी सहयोग करता है। आधुनिक जटिल समाजों में पुलिस और सेना ऐसे उपकरण हैं जिनके द्वारा सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखी जाती है। अपराध करने वालों को कानून के द्वारा दंडित किया जाता है। कानून एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा राज्य सामाजिक नियंत्रण के कार्य को संचालित करता है।

विभिन्न समाजों में राजनीतिक संगठन का लगातार विकास हो रहा है। जैसे–जैसे समाज सरल (परम्परागत) से जटिल – आधुनिक – औद्योगिक समाजों में विकसित होते जा रहे हैं, वैसे – वैसे सामाजिक संगठनों के अन्य सभी पहलू के साथ – –साथ राजनीतिक संस्थान भी अधिक जटिल होते जा रहे हैं। लेकिन अभी भी कई ऐसे भी राज्यविहीन समाज हैं जिनमें केंद्रीय सत्ता का प्रावधान अभी तक नहीं हैं। ऐसे ही समाज को समाजिक मानव विज्ञानियों के द्वारा खंडीय समाज का नाम दिया गया है।

7.3 राजनीतिक संस्थाएं और राज्यविहीन समाज

आधुनिक समाजों की तुलना में सरल समाजों की आबादी बहुत कम होती है। इन समाजों में कोई निश्चित राजनीतिक समुदाय नहीं होता है। यहां, चूंकि आमने–सामने संबंध होता है, इसीलिए सामाजिक नियंत्रण का कोई औपचारिक अभिकरण (एजेंसी) मौजूद नहीं होता है। अब हमलोग खंडीय अथवा राज्यविहीन समाजों में राजनीतिक संगठन पर चर्चा करने जा रहे हैं। सभी प्रकार के खंडीय समाजों में, हालांकि चाहे उनका राजनैतिक संगठन कितना भी सरल हों, फिर भी आमतौर पर अपने क्षेत्रीय अधिकारों की संकल्पना रहती है। इस प्रकार के समाजों में समाजिक नियंत्रण का माध्यम उम्र की संकल्पनाओं और समाजिक प्रतिबंध होता है।

यहाँ, हमें यह स्पष्ट अवश्य कर देना चाहिए कि हमलोग आम तौर पर अफ्रीकी जनजातियों के बारे में चर्चा कर रहे हैं। इन समाजों में विभिन्न प्रकार के राजनीतिक संस्थान जैसे कि परिषद, राजतंत्र, मुखिया (चीफ), आदि मौजूद होते हैं। आम तौर पर खंडीय समाजों में शक्ति और प्राधिकार समाज के विभिन्न समूहों में बटें होते हैं। राजनीतिक व्यवस्था बनाए रखने का आधार नातेदारी और वंश परम्परा होता है।

अगर निम्नलिखित लक्षण हों तो इसे उस समाज को खंडीय या राज्यहीन कहा जा सकता है:

- ऐसे समाज जिसकी कोई निश्चित सीमा या स्थायी भौतिक सीमा नहीं होती।
- जिसमें मौखिक परंपराओं का पालन किया जाता हों और नौकरशाही का अवधारणा नहीं हो।
- ऐसे समाजों में साधारणतया एक ही व्यक्ति के पास धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक शक्तियों निहित हों
- जहाँ कोई निश्चित और कठोर विचारधारा नहीं हो, और
- आर्थिक व्यवस्था सरल हो।

7.3.1 राज्यहीन समाजों के बारे में आकड़ों के स्रोत

सरल समाजों के बारे में ज्ञान के तीन स्रोत हैं, जो की गैर सरकारी स्रोत हैं। इन्हीं स्रोतों से सूचनाएँ संग्रहित की गई हैं।

- खंडीय समाज के बारे में पुरातात्विक अभिलेख,
- धर्म–प्रचारकों (मिशनरियों), यात्रियों और प्रशासकों द्वारा लिखा गया साहित्य, और
- मानवविज्ञानी द्वारा लिखित विनिबन्ध (मोनोग्राफ)।

खंडीय समाजों के अध्ययन में पुरातात्विक अभिलेख (रिकॉर्ड) (अभिलेख) का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह एक महत्वपूर्ण बिंदु की ओर जाता है। इन सरल समाजों के बारे में लगभग सभी अभिलेख यह बतादिखाते हैं कि ये समाज हमेशा परिवर्तन, वृद्धि और विकास की प्रक्रिया में भी शामिल होते रहे हैं। इसीलिए यहाँ इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि कोई भी सरल समाज स्थिर नहीं होता बल्कि इस प्रकार समाज भी गतिशील होते हैं।

खंडीय समाजों का अध्ययन करने वाले मानवविज्ञानियों ने धर्मप्रचारकों (मिशनरियों), यात्रियों और औपनिवेशिक प्रशासकों द्वारा लिखित साहित्य का उपयोग किया है। मानवविज्ञानियों द्वारा खंडीय समाजों के ऊपर लिखे गए मोनोग्राफों का महत्व भी सर्वाधिक है। इस इकाई में दिए गए सूचनाओं के मुख्य स्रोत यहीं हैं।

7.3.2 खंडीय समाजों के प्रकार

खंडीय समाजों को आमतौर पर उनके सामाजिक–राजनीतिक संगठनों के आधार पर चार प्रकार के समाजों में विभाजित किया जा सकता है:

i) पहले प्रकार में वे समाज आते हैं जो आमतौर पर शिकार और भोजन संग्रह कर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। इनमें सबसे बड़ी सामाजिक इकाई परिवार या परिवार के करीबी नातेदार होते हैं। इसके अलावा कोई अन्य औपचारिक समूह मौजूद नहीं होता है। ऐसे समाज में न समाजिक स्तरीकरण या श्रेणीकरण और न ही कोई अलग से राजनीतिक संस्थान होता है। इस प्रकार के समाज में कोई विशिष्ट राजनीतिक संगठन भी मौजूद नहीं होता है। इन परिवारों में सत्ता के वरिष्ठ सदस्यों के हाथ में प्राधिकरण या सत्ता रहती है। लेकिन यह सत्ता या प्राधिकार बहुत ही सीमित होता है। इस प्रकार के समाजों के कुछ उदाहरण दक्षिण अफ्रीका के बुशमैन और कुछ दक्षिण पूर्व एशिया की कुछ जनजाति लोग और अंडमान के जारवा जनजाति आदि हैं।

ii) समाज का दूसरा प्रकार ग्राम समुदायों से निर्मित होता है जो विभिन्न प्रकार के नातेदारी और आर्थिक संबंधों द्वारा एक दूसरे से जुड़े होते हैं। इनकी प्रशासनिक व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए औपचारिक रूप से परिषदें नियुक्त होती हैं। इन परिषदों में सदस्यता की पात्रता का स्वरूप एक समाज से दूसरे में भिन्न –भिन्न होती होता है। पात्रता के लिए कुछ मानदंड होते होते हैं, जैसे या तो पुराने परिवार या प्रतिष्ठित परिवार आदि या किसी अन्य प्रकार का की सामाजिक प्रतिष्ठा जैसे कि आर्थिक रूप से शक्तिशाली परिवार के वंशज होना हैं। यहाँ हम देख सकते हैं कि इस प्रकार के समाजों में राजनीतिक व्यवस्था का उदय हुआ है। इस प्रकार के कुछ समाज पश्चिम अफ्रीका के इबो और याको जनजातियों में देखे जा सकते हैं।

iii) तीसरे प्रकार के समाजों में राजनीतिक नियंत्रण का आधार आयु–निर्धारित प्रणालियों में निहित होता है। यह पूर्वी अफ्रीका के समाजों की एक सामान्य विशेषता भी है। इन समाजों में प्राधिकरण या सत्ता का आवंटन समाज के बुजुर्गों में ही निहित होता है। इस प्रकार के समाजों में राजनैतिक संगठन का आधार आयु–निर्धारित वरिष्ठता के सिद्धांत पर आधारित होता है। इस तरह की जनजाति का उदाहरण अमेरिका का चेयनै (cheyenne) और अफ्रीका का नुएर (Nuer) जनजाति है।

iv) अंत में, चौथे प्रकार के समाज वे हैं जिनमें एकपक्षीय वंशानुक्रम के आधार पर व्यवस्थित समूहों द्वारा राजनीतिक सत्ता का निर्धारण होता है। यहाँ एकपक्षीय वंशानुक्रम को अर्थ यह है कि माता या पिता के वंश क्रम में तलाशा जाता है और उसके आधार पर सत्ता सुनिश्चित करना। ऐसे समाजों में कोई विशिष्ट राजनीतिक क्रियाकलाप नहीं होता है। इनमें कोई राजनैतिक मुखिया नहीं होता है, लेकिन समाज के बुजुर्ग के द्वारा सीमित अधिकार का प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार के समाज में समाज के भीतरी के समूहों में संतुलित विरोध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इस तरह के समाजों में से कुछ उदाहरण हैं, जैसे – दक्षिणी सूडान नुएर और डिंका। इसके बारे में आगे समझाया जाएगा।

7.3.3 राजनैतिक नियंत्रण के रूप में नातेदारी प्रणाली

सरल समाजों में नातेदारी प्रणाली की व्यवस्था सामाजिक–राजनीतिक और आर्थिक संगठन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके प्रकार्य को राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों के कार्यों में व्यापक और अधिव्यापी रूप में देखा जा सकता है। यह समाज में व्यवस्था और संतुलन बनाए रखने का कार्य करती है। सरल समाजों के भीतर विखंडन या संघर्ष और विलयन या सम्बद्धता में सहयोग और संघर्ष के संदर्भ में भी क्षेत्रीयता और नातेदारी की भूमिका होता है।

उदाहरण के लिए, नुएर जनजाति कई खंडों में विभाजित होती है। इस जनजाति का प्राथमिक खंड सबसे बड़ा होता है और यह सबसे बड़े क्षेत्र पर कब्जा भी करता है, और इसके बाद में आता है – माध्यमिक खंड जो प्राथमिक खंड से छोटा होता है और यह अगले सबसे बड़े क्षेत्र पर कब्जा करता है और अंत में आता है – तृतीय खंड, जो सबसे छोटा है और सबसे छोटे क्षेत्र पर ही कब्जा करता है। नुएर समाज का यह विभाजन केवल राजनीतिक या क्षेत्रीय नहीं है, बल्कि यह एक नातेदारी के वितरण पर आधारित होता है। इस तरह के समाज में संघर्ष (विरोध) और सहयोग (मित्रता) में नातेदारी और वंशानुक्रम परम्परा का बहुत बड़ी भूमिका होती है।

सोचें और करें 1

अपने स्वयं के समाज के सामाजिक–राजनैतिक क्रम के साथ न्युअर समाज (यहाँ वर्णित के रूप में) की तुलना करें। इस तुलना पर एक नोट लिखें। अपने अध्ययन केंद्र में अन्य छात्रों के साथ अपने नोट की तुलना करें।

सभी खंडीय समाजों में, जहाँ समाज कई खंडों या भागों में विभाजित होता है, उनमें क्षेत्र, निवास स्थान, नातेदारी, वंश, विरासत और विवाह के आधार पर मित्रता स्थापित होता है। इस प्रकार के समाजों में संघर्ष के द्वारा सामंजस्य (मित्रता) स्थापित होता है। उदाहरण के लिए, संघर्ष के मामले में, एक व्यक्ति के वंशानुगत रूप से संबंधित समाजिक समूह उस वर्ग के सभी समाजिक समूह के सभी सदस्य, उस व्यक्ति के शत्रु के वंश वाले के विरूद्ध एकत्रित हो जाते हैं। शत्रु अपने वंश या दूसरे वंश का सदस्य हो सकता है। इस समाज का खंडीकरण एक –दूसरे के साथ वास्तविक या संभावित शत्रुता या विरोध करके स्वयं के अस्तित्व को बनाये रखता है। यह विरोध इन समाजों में ''खून के झगड़े'' या कुलबैर के रूप में प्रकट व्यक्त होता है। यदि किसी व्यक्ति ने समाज के किसी अन्य वर्ग के सदस्य को मार दिया है, तो अन्य समाजिक समूह तब तक संतुष्ट नहीं होगा जब तक कि हत्यारे या उसके समूह के किसी भी सदस्य को मार नहीं दिया जाता। हालांकि, ये अंतर–वंशीय विरोधों का विरोधी का प्रत्युत्तर देने के लिए अन्य क्रॉस–कटिंग संबंधों जैसे वैवाहिक संबंधों और मातृत्व नातेदारी के रूप में भी जुड़े होते हैं ।

इस प्रकार, सर्वदा विरोधी समूहों में वे लोग भी हमेशा शामिल रहते हैं जो आपस में होने वाले संघर्षों के समय शांतिपूर्ण समाधान की तलाश करते हैं।

इसलिए, हम कह सकते हैं कि खंडीय समाजों में नातेदारी प्रणाली राजनीतिक भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। विजातीय विवाह (exogamy) का सिद्धांत –जहां एक व्यक्ति अपने समुदाय के बाहर शादी करता है, और अंतर्विवाही (सजातीय विवाह (endogamy) – जहां एक व्यक्ति अपनी समुदाय के भीतर ही शादी करता है– एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन्हीं दो सिद्धांतों के आधार पर संघर्ष या विवाद होने पर संभावित मित्रों या सहयोगियों का निर्णय होता है।

7.4 खंडीय समाज के राजनीतिक सिद्धांत

खंडीय समाजों की संख्या बहुत अधिक है और उनकी परम्पराओं में भी काफी ज्यादा अंतर है। इतने मतभेदों के उपरांत भी कुछ बुनियादी सिद्धांतों को ढूंढ पाना संभव है, जिनका सभी राज्य विहिन समाज संगठन पालन करते हैं। ये सिद्धांत सभी खंडीय समाजों में देखे जा सकते हैं:

- विभिन्न समूहों या खंडों के एकजुट होने पर समाज भी एकजुट हो जाता है। वे शुरू में विभिन्न समूहों के प्रति निष्ठा रखते हैं, लेकिन कुछ विशेष कारणों से जैसे कि क्षेत्र की रक्षा या रक्त संघर्ष आदि मामलों के संदर्भ में ये एकजुट हो जाते हैं।

- प्राधिकार प्राप्त अधीनस्थ सदस्य स्वतंत्र हो जाता है। इस प्रकार वरिष्ठ सदस्यों द्वारा जिन कनिष्ठ सदस्यों को प्राधिकार या सत्ता तब सौपीं जाती है वे खंडीय समाज में अपने आप में शक्तिशाली हो जाते हैं।

- खंडीय समाजों में आध्यात्मिक या रहस्यमय प्रतीक भी समाज को 'एकीकृत' करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन प्रतीकों को सारा समाज पवित्र मानता है और इसे संरक्षित भी करते हैं।

7.4.1 एक उदाहरण: टोंगा समुदाय

आइए हम अफ्रीकी जनजाति टोंगा का उदाहरण लेते हैं। टोंगा जनजाति के लोग बाहरी हमलों से बचने की उम्मीद में छोटे –छोटे गांवों में रहते हैं। इस प्रकार के हमलों के पीछे का उद्देश्य भोजन और कीमती सामान चुराना होता है। इस जनजाति में मुखिया के पास बहुत कम शक्ति होती है। यह खंडीय समाज की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। यह जनजाति कृषि संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए खानाबदोश है (ये लोग समय–समय पर स्थानों को बदलते रहते हैं)। ऐसा करने से कई नई दोस्ती भी बन जाती है और अक्सर पुरानी दोस्ती टूट भी जाती है। टोंगा एक मातृवंशीय संबंधी नातेदारी समूह से संबंधित परिजन समूह से संबंधित है जिसे 'मुकोवा' कहा जाता है।

अब यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि दो मुकोवा लोगों के बीच विवाह संबंध नहीं हो सकता है। वहिर्विवाह या विजातीय विवाह (exogamy) का यह सिद्धांत विभिन्न संबंधों और मित्रता स्थापित करने में एक प्राथमिक तंत्र है। एक बहुत ही रोचक विशेषता यह है कि टोंगा कबीले में (चचेरे भाई –बहन) (cross cousin) के बीच मजाक का संबंध होता है। एक परिहासत्मक संबंध का अर्थ यह है किी हर्षोल्लास का संबंध अनुष्ठान में बदल दिया जाता है। व्यक्ति आपस में सामान्य रूप से बात नहीं करते बल्कि मजाक और हंसी करना अनिवार्य होता है। यह संस्था बहुत महत्वपूर्ण है। टोंगा के बीच इस परिहास का राजनीतिक महत्व है।

इसका कारण यह है कि कबीले के लोगों में परिहास व्यवस्था के कारण बड़ी संख्या में मित्रता के संबंधों का निर्माण होता है। इस प्रकार के प्रथा से समाज में विशेषाधिकार प्राप्त मध्यस्थों और नैतिकता का का निर्णय लेने वालों को भी सभी लोगों के लिए जीवन में बिना जताये हस्तक्षेप करने का अवसर उपलब्ध होता है। और यह लोगों को जीवन को प्रभावित भी करता है। परिहास के दौरान परामर्श और चेतावनी भी दिये जाते हैं और ऐसा इसलिये क्योंकि इस प्रकार का परामर्श को चुटकुले के रूप में भी दिया जाता है। राजनीतिक शक्ति और प्राधिकार की मध्यस्थता के बिना ही समाज इस प्रकार के कार्य को सम्पन्न करता है।

7.4.2 एक उदाहरणः लोजी समुदाय

कुछ खंडीय समाजों में ऐसी संस्थाएँ हैं जहाँ भोजन दुर्लभ या सीमित है तो ऐसी परिस्थिति में समाज के सभी सदस्यों के भोजन संबंधी अधिकारों की रक्षा करती हैं। चूंकि इन समाजों में संपत्ति और भोजन के संचय की अवधारणा मौजूद नहीं है, इसलिए वितरण की समस्या हमेशा बनी रहती है। अफ्रीका के लोजी समुदाय के बीच में 'कुफुंडा' नामक एक संस्था मौजूद है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – कानूनी चोरी। इस प्रकार की संस्था कुछ अन्य जनजातियों में भी मौजूद है। जनजाति का कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति के घर से कोई भी वस्तु या खाद्य पदार्थ (भोजन) ले सकता है। इस प्रकार की संस्था से भूख की समस्या का हल पाया जाता है, क्योंकि व्यक्ति को हमेशा एक परिजन या दूसरे से भोजन मिल सकता है। इन जनजातियों में एक व्यक्ति को अपना भोजन दूसरों के साथ साझा करना पड़ता है। इस प्रकार कुफुंडा या कानूनी चोरी एक प्रकार का राजनैतिक संस्थान है जो समाज के नातेदारी और आर्थिक संरचनाओं के संदर्भ में एक अलग प्रकार का अर्थ देता है।

बोध प्रश्न 1

नोटः क) नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कर अपना उत्तर लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तरों की तुलना करें।

1) एक खंडीय समाज से आप क्या समझते हैं? अपने उत्तर के लिए लगभग पाँच पंक्तियों का उपयोग करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) राज्यहीन समाज को सरल समाज भी कहा जाता है।

हा नहीं

3) 'रक्त संघर्ष' समूह के सदस्यों को रक्त दान करने की एक विधि है।

हाँ नहीं

4) राज्यहीन समाज के बारे में ज्ञान के तीन स्रोत क्या हैं?

(i) .....

(ii) .....

(iii) .....

5) एक ''मजाक का रिश्ता'' हैः (सही उत्तर पर टिक करेनिशान लगाएं)

i) हास्यकारों की एक बैठक।

ii) चुटकुलों की प्रतियोगिताएं।

iii) संस्थागत व्यवहार का एक रूप।

iv) एक–दूसरे का मजाक उड़ाना।

7.5 भारत में खंडीय जनजातियाँ

यह भाग आपको यह समझाने में मदद करेगा कि भारत के खंडीय जनजातियाँ किस प्रकार कार्य करती हैं और भारतीय राष्ट्र के भीतर खुद को किस प्रकार संगठित करती हैं। यह भाग इस बात पर भी चर्चा करेगा कि समकालीन भारत में कुछ जनजातियां किस प्रकार खंडीय समाज की श्रेणी के अंतर्गत आती हैं। जैसा कि आप देखेंगे कि उनके पास एक समृद्ध और जटिल जीवन है और वे अपनी सामाजिक व्यवस्था भी बनाए रखते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से उनके कार्य करने के पद्धतियों का अपना ही औचित्य होता है और काफी हद तक वे अभी भी इन्हीं पद्धतियों का ही पालन करते हैं। हालांकि, यह नहीं माना जाना चाहिए कि वे समय के साथ नहीं बदले हैं। वास्तव में, वे तेजी से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में आगे बढ़ रहे हैं और उन्हें विकसित करने की कोशिशें भी निरंतर की जा रही हैं।

7.5.1 भारतीय जनजातियों में राजनैतिक संगठन

भारतीय जनजातियों में राजनैतिक संस्थान निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित होते हैं:

i) कुल और वंश परम्परा
ii) ग्राम इकाई और
iii) गांवों का समूह।

प्रत्येक कुल का एक सामान्य पूर्वज होता है, जिससे उसकी वंश परम्परा की जानकारी मिलती है और जिसे आसानी से खोजा भी जा सकता है। प्रत्येक कुल समय के साथ ही कई प्रकार वंशों में विभाजित हो जाता है या टूट जाता है।

खंडीय समाजों में राजनैतिक संरचना के एक सिद्धांत के रूप में छोटे – छोटे भागों में वंश विभाजन का काफी महत्व होता है। भील आदिवासी समाज में वंश संरचना पांच – छह पीढ़ियों तक एक इकाई के रूप में चलती है।

7.5.2 वंश प्रणाली की व्यवस्था

संथाल, उरांव और भील के बीच वंश प्रणाली की व्यवस्था में राजनैतिक कार्यप्रणाली और संघर्ष का चित्रण निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है :

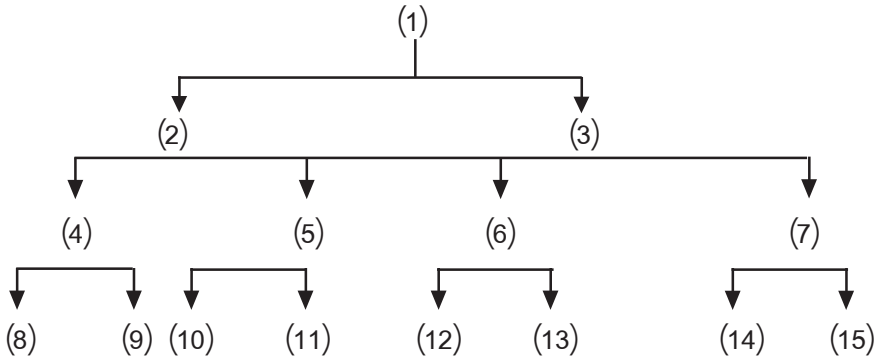

रेखाचित्र 1: खंडीय समाजों में राजनीतिक कार्यपद्धति

इस रेखाचित्र में सदस्य विभिन्न क्रमों में सदस्य वंश परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसमें सभी सदस्यों का मानना है कि वे लोग (1) से वंश से संबंधित हैं। पुरुष रेखा (1) से (2) और (3) से नीचे की ओर आती हैं और इस प्रकार दो वंशों का निर्माण हो जाता

है। इसके बाद के लाइनों का खंड आगे क्रमशः (4) – (5) और (6) – (7) में विभाजित हो जाती हैं और इसी प्रकार अगली पीढ़ी में क्रमशः (8), (9), (10), (11), (12), (13), (14), (15) में विभाजित हो जाते हैं। इस संरचना का संघर्ष को नियंत्रित करने में बहुत महत्व होता है।

प्रायः यह देखा जाता है की (चित्र के अनुसार) अगर सदस्य (8) और (9) के बीच शत्रुता होती है। ऐसे मामले में (8) के सभी सदस्य (9) के सभी सदस्यों के संभावित दुश्मन हैं। वंश परम्परा की अन्य सभी शाखाएँ जैसे (4), (5), (10), (11), (2), आदि इस दुश्मनी में शामिल नहीं हैं। इतना ही नहीं बल्कि (12), और (13) भी इस दुश्मनी में शामिल नहीं है। यह एक जनजाति के भीतर किसी भी संघर्ष के मामले में एक सामान्य सिद्धांत है, जो सभी विभाजनों पर समान रूप से लागू होता है।

अब ध्यान से एक अलग स्थिति पर विचार करें। यदि (8) या (9) के सदस्य का संघर्ष अगर (10) या (11) के सदस्य के साथ होता है तो सभी (8) और (9) एकजुट हो जायेगें और अपना एक समूह बना लेगें। इस प्रकार (8) और (9) के सदस्यों के विरूद्ध में (10) और (11) के सदस्य एकत्रित होकर अपना विरोध प्रकट करगें।

एक उच्चतर स्तर पर विचार करें। अगर (4) या (5) के सदस्य या सदस्य (6) या (7) के सदस्यों के साथ शत्रुता होने पर आखिर क्या स्थिति होगी? इस परिस्तिथियों में पूरी वंशावली से जुड़े हुए सदस्य एकत्रित होकर उनसे लड़ने के लिए तैयार हो जाएगी। इसका अर्थ यह है की क्रमशः (8), (9), (10) और (11) के वंश सदस्य क्रमशः (12), (13), (14) और (15) के वंश के सदस्य शत्रु हो जायेगें।

यदि (2) और (3) के सदस्यों के बीच अगर और भी उच्चतर स्तर का संघर्ष होता है, तो उससे संबंधित सभी सदस्य एक–दूसरे के विरोधी बन जाएंगे। अंत में यदि कबीला (1) दूसरे कबीले का विरोधी हो जाता है, तो कबीला (1) के सभी सदस्य विरोधी कबीले के सदस्यों के साथ झगड़े के लिए सामूहिक रूप से तैयार हो जायेगें।

जब शत्रुता समाप्त हो जाती है, तो सभी सदस्य रेखाचित्र में दी गयी पहले की स्थिति में आ जाते हैं। यह प्रक्रिया न केवल भारत में बल्कि अन्य कहीं भी जैसे अफ्रीका में विशेष रूप से नुएर जनजाति के बीच भी देखा गया है, जिसकी चर्चा इवांस–प्रिचर्ड ने अपनी पुस्तक *द नुएर* (1940) में किया है।

सोचे और करें 2

हाल के विवाद के बारे में अपने परिवार या नातेदारी के अन्य सदस्यों से जानने का कोशिश करें। इस विवाद के बारे में दो पन्नों में एक नोट लिखें। जिसमें शामिल विभिन्न कारकों का वर्णन करें और विवाद के कारण को लिखें। इतना ही नहीं विवाद में शामिल सभी लोगों के समाजिक स्थिति को भी लिखें, और अंत में उन लोगों का भी उल्लेख करें जिनके माध्यम से विवाद को सुलझाया जा सका।

अपने अध्ययन केंद्र में अन्य छात्रों के साथ अपने उत्तर की तुलना करें।

7.5.3 संघर्ष को नियंत्रित करना

संघर्ष को नियंत्रित करने करने में क्षेत्रीय अलगाव पृथकता की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिससे अपने से बड़े या विभिन्न पीढ़ियों के बीच होने वाले संघर्ष को विनियमित करता है।

जनजातीय गाँव एक सक्रिय राजनीतिक इकाई होता है। हम देखते हैं कि गांव को विनियमित करने का तरीका निम्नलिखित प्राधिकरण के अंतर्गत होता हैः

- ग्राम अधिकारी, और
- ग्राम प्रशासन।

राजनीतिक तंत्र अपने अधिकारियों के माध्यम से ही कार्य करता है जो विभिन्न जनजातियों में विभिन्न पदनामों से जाने जाते हैं। छोटी जनजातियों (बिरहोर, जुआंग) में ये सभी गतिविधियाँ एक ही आदमी के हाथों में केंद्रित होता है। प्रमुख जनजातियों (संथाल, भील) के मामले में दो मुखियाओं के हाथ में सत्ता केंद्रित रहती है। एक मुखिया सांसारिक कार्य देखा है तो दूसरा मुखिया धार्मिक कार्य देखता है। इसका अर्थ यह है कि एक कार्य धर्मनिरपेक्ष के लिए है और दूसरा का कार्य पवित्र उद्देश्यों के लिए है। कई बार इनके बहुत से सहायक भी होते हैं।

अधिकांश जनजातियों के पास शांति भंग करने और सामाजिक अपराधों के उल्लंघन से निपटने के लिए एक उचित न्यायिक प्रणाली भी होती है। आमतौर पर एक ग्राम परिषद या बड़े – बुजुर्गों की एक सभा होती है। उदाहरण के लिए, मलेरों में गाँव के बुजुर्गों की परिषद की अध्यक्षता मांझी करता है । गोरियत सरकारी वकील के रूप में काम करता है। गोरियत के द्वारा मांझी की ओर से पंचायत बुलायी जाती है।

शाम (संध्याकालीन) की बैठकों में सदस्यों के व्यवहार पर अनौपचारिक नियंत्रण रखा जाता है। यहाँ की गयी आलोचना बहुत तीखी और प्रभावी होती है। सार्वजनिक अस्वीकृति के द्वारा व्यवहार को नियंत्रित करने के साथ –साथ सुधारा भी जाता है और यह तरीका भी काफी प्रभावशाली होता है। यदि कोई सदस्य अलिखित आदिवासी कानूनों से बाहर जाता है तो यह बता भी दिया जाता है कि इस वजह से उसे क्या –क्या दंड मिल सकता है। संक्षेप में, संध्याकालीन बैठकों के आयोजन का उद्देश्य यह होता है की सीमा का उल्लंघन करने वाले सदस्यों को ठीक कियामार्ग पर लाया जा सकें। इस प्रकार से उनकी समस्या इतनी गंभीर नहीं हो जाती है कि आगे चलकर सजा देनी पड़ी।

7.5.4 अपराध और सजा

हालांकि ऐसा कोई समाज नहीं है जिसमें आपराधिक मामले नहीं होते हैं। इसके कारण समाज में गंभीर असंतुलन के अलावे असमानता भी पैदा हो जाता है। इसे सजा के माध्यम से ही ठीक किया जा सकता है।

एक आपराधिक मामला को निर्धारित करते समय जो सबूत मांगे जाते हैं, वे इस प्रकार हैंः

- किसी पवित्र देवी या देवता के नाम पर ली गयी शपथ।
- जनजातीय मूल्यों के आधार पर ली गयी सत्य परीक्षा।

मलेरों में जीवन अर्पण की शपथ दिलाई जाती है। संदिग्ध व्यक्ति चाकू से किसी पवित्र स्थान को छूकर सत्य बोलने या मर जाने का कसम खाता है। इन परिस्तिथियों को निर्मित करने में समाज का व्यापक प्रभाव तो होता ही है लेकिन उस व्यक्ति की भी आस्था होती है जिससे उसे सही निर्णय पर लाया जाता है। इस प्रकार का निर्णय प्रायः हमेशा न्यायपूर्ण होता है।

सत्य परीक्षा के अंतर्गत लाल गर्म कुल्हाड़ी और खौलते तेल में हाथ डालना भी शामिल

है। संदिग्ध व्यक्ति अगर निर्दोष साबित होना चाहता है तो उसे इस प्रकार के सत्य परीक्षा से गुजरना होता है। 'सबेली' नाम की सत्य परीक्षा मलेरों में होती है। इस सत्य परीक्षा में दोषी व्यक्ति को लाल गर्म कुल्हाड़ी को पकड़ना होता है। 'पोछाई' सत्य परीक्षा में कर्मकांडी चावल की बीयर (शराब) का इस्तेमाल किया जाता है। केवल निर्दोष व्यक्ति ही लाल गर्म कुल्हाड़ी को पकड़ने या अनुष्ठानिक बीयर पीने के बाद सही सलामत बच सकता है। दोषी व्यक्ति या तो जल सकता है या फिर मर सकता है।

शपथ और सत्य परीक्षा दोनों ही भयानक विकल्प होता है। दोषी व्यक्ति द्वारा अपने को कानून के सामने उपस्थित होने का स्वैच्छिक साधन है। दोषी व्यक्ति के अपराध के गंभीरता के अनुसार ही अर्थ दंड या जुर्माना दिया जाता है। सबसे गंभीर सजा बहिष्कार है। कबीले के लोगों के द्वारा ढोल बजाते हुए आरोपी के घर को अपवित्र करते हैं, और उसमें कूड़ा–करकट डालकर डालकर खराब कर देते हैं। इतना ही नहीं बल्कि कई बार उसे जला भी डालते हैं।

यह सब अपराध और अपराधी के प्रति उनकी नापसंदगी और घृणा का प्रतीक होता है। अगर अपराध की प्रकृति काफी गंभीर होती है तो अपराधी को बहिष्कार की सजा दी जाती है। इसका अर्थ यह है की अपराधी व्यक्ति को समाज में स्वीकार नहीं किया जाता है। इस तरह के अपराधों में दोषी व्यक्ति को वर्जित श्रेणी में शादी करना भी शामिल होता है। अगर कोई व्यक्ति अपने कबीले के पवित्र कुल देवी या देवता के प्रति सम्मान का भाव नहीं रखता है या उस पर हमला करता है या उसे तोड़ता है या उस पर थूकता है, इस सभी परिस्तिथियों में उस व्यक्ति को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है।

बोध प्रश्न 2

नोटः क) आपके उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से तुलना कीजिए।

1) खंडीय समाजों में विखंडन और संयोजन की प्रक्रिया को संक्षेप में वर्णन करें। अपने उत्तर के लिए लगभग पाँच पंक्तियों का उपयोग करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारत के तीन खंडीय जनजातियों के नाम लिखिए ।

i) .....

ii) .....

iiii) .....

3) अनौपचारिक नियंत्रण की पद्धत्ति को संक्षेप में बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) सबेली नामक सत्य परीक्षा में क्या व्यक्ति को मृत्यु तक उपवास पर रखा जाता है।

हाँ नहीं

5) बिटलाहा एक संथाल भगवान का नाम है।

हाँ नहीं

7.6 राजनैतिक संस्थाएँ और समाज का विकास

समाज को शिकार द्वारा भोजन इकट्ठा करने वाले समूहों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रथम – छोटे शिकारी

द्वितीय – बड़े शिकारी

छोटे शिकारी को आसान शिकारी भी कहा जा सकता है। छोटे शिकारी पूर्ण रूप से फल, कीट और कीड़े –मकोड़े संग्रह कर अपना जीवन यापन करते हैं। ये पेड़ की शाखाओं और पत्तियों से बने अस्थायी झोपड़ियों में रहते हैं। कुत्ते के अलावा उनके पास कोई घरेलू जानवर नहीं होता है।

बड़े शिकारी को कठोर शिकारी भी कहा जा सकता है। ये शिकार करने में अधिक निपुण होते हैं और बड़े जानवरों का शिकार करते हैं। इनके मकान भी मजबूत होते हैं और ये लोग घोड़ों को पालते हैं। इनमें क्षेत्रीयता की भावना बहुत प्रबल होती है। ये लोग पालतू जानवरों को पालने के अलावे कताई, बुनाई और मिट्टी के बर्तन बनाने का भी कार्य करते हैं। इन समाजों में जटिल केंद्रीय सत्ता का विकास देख सकते हैं। हमलोग अब इस पहलू पर विचार करेंगें। आरेख 2 में सरल समाज के विकास के स्तर को दर्शाया गया है।

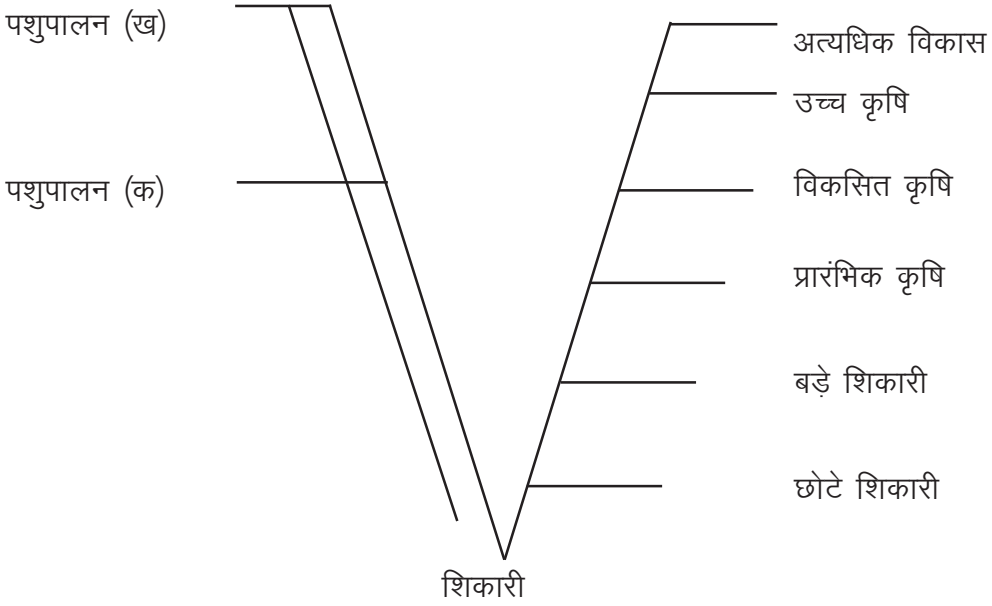

आरेख – 2: विकास के स्तर

हम चाहेंगे कि आप तीन महत्वपूर्ण तथ्यों पर ध्यान दें:

- मानवविज्ञानी के प्राप्त विवरण और पुरातत्व से प्राप्त सूचना में काफी समानता है।
- पशुपालन और कृषि विकास का क्रमिक चरण (एक के बाद एक) एकसमान नहीं है। ये बड़े शिकारियों की सामाजिक स्थिति के अनुसार विकास के विभिन्न चरणों के रूप में समकालीन प्रतीत होते हैं।
- उच्चस्तरीय स्थिर और मिश्रित कृषि के आधार पर ही दीर्घ स्तर की सामाजिक व्यवस्थाऐं जिनमें राज्य निर्माण भी शामिल है, का विकास हो पायेगा। विकसित समाजिक प्रणाली के लिए मिश्रित कृषि के साथ – साथ स्थायी निवास भी है और राज्य निर्माण का विकास भी सम्भव हो पायेगा।
- इस प्रकार यह समझा जा सकता है की राज्यविहीन समाज शिकार और पशुपालन के अतिरिक्त समाजिक व्यवस्था को एक सीमा तक विकसित कर सकते हैं। वे इस सीमा से आगे नहीं जा सकते हैं। आइए, अब संक्षेप में विचार करें कि इन घटनाक्रमों से क्या निकलता है।

7.6.1 समाज में सरल प्रकार की सरकार का उदय

सबसे पहले हम देखते हैं कि प्रत्येक समुदाय में सरल प्रकार की सरकार का उदय होता है। छोटे शिकारियों में सरकार का एक बहुत ही सरल रूप होता है लेकिन उच्च कृषि और पशुपालन के स्तर पर सुनिश्चित राजनीतिक प्रणाली की स्थापना की जा सकती है।

दूसरे, सुनिश्चित राजनीतिक प्रणाली का दुसरे वृहत्तर वर्गों में भी विस्तार होता है। छोटे शिकारियों में केवल पच्चीस प्रतिशत वर्ग में आरम्भिक समुदाय परिवार और नातेदारी के वर्ग तक ही एक राजनीतिक व्यवस्था सीमित रहती है। लगभग अस्सी फीसदी वर्ग के पास राजनीतिक और प्रशासनिक तंत्र की समुचित व्यवस्था रहती है।

अब कुछ दिलचस्प विशेषताएं को देखने का प्रयास करते हैं। हम पाते हैं कि कबीले के सरदार के पास जो सत्ता होती है वह रीति – –रिवाजों और परम्पराओं के द्वारा प्राप्त सत्ता होती है। इस प्रकार की सत्ता में बुजुर्गों की परिषद शामिल होती है। सभी व्यक्तियों को प्रथागत नियमों का पालन करना होता है। इसे पारम्परिक व्यवस्था भी कहा जाता है।

विधि के संगठन में भी इस प्रकार का विकास स्पष्ट होता है। खंडीयराज्यविहीन समाजों में विवादों को सुलझाने का कार्य नातेदारी प्रणाली के द्वारा सम्पन्न होता है। अफ्रीकी जनजाति नुएर में भी यह देखा गया है की 'कुल बैर या प्राथागत लड़ाई' में बदला लेने और दंड देने का परम्परा भी प्रथा या रिवाज में मिलता है। हालाँकि इस प्रकार से दण्डित करने की प्रथा में से व्यक्ति के व्यक्तिगत अपराध का कोई संबंध नहीं होता है। क्षतिपूर्ति या मुआवजे के ऐसे रूप भी हैं जहां दोषी नातेदारों के वर्ग को सजा या दण्डित करते हुए उन्हें समाज में शामिल कर लिया जाता है। इस बारे में पहले ही चर्चा की जा चुकी है।

कृषि और पशुपालन के उच्चतम श्रेणी वाले समाजों में लोक न्याय की व्यवस्थाएँ स्थापित की जाती हैं। सामाजिक व्यवस्था पर आक्रमण के संदर्भ में यह नियमित रूप से होती है लेकिन छोटे पैमाने पर होने वाले संघर्षों में अनियमित होती है। ऐसे मामलों में प्रथागत प्रक्रियाओं को लागू किया जा सकता है बशर्ते वे सामाजिक रूप से विघटनकारी न बनें। अधिक जटिल समाजों में नियमित लोक न्याय होता है।

खंडीयराज्यविहीन समाज में जैसे –जैसे परिवर्तन होता है वैसे –वैसे प्रतिशोधात्मक से सुधारात्मक दंड व्यवस्था का विकास होता है। कबीलों से संबंध रखने वाले और प्रतीकात्मक अपराध के लिए सुधारात्मक दंड व्यवस्था का स्थान दावों और प्रतिदावों वाली क्षतिपूरक दंड व्यवस्था ले लेती है। इन परिस्तिथियों में शपथ और सत्य परीक्षा का प्रयोग भी कम होने लगता है। शिकारियों और खाद्य संग्राहक समाज में मातृ –सत्तात्मक और पितृ – –सत्तात्मक वंश परम्परा का ही सिद्धांत प्रमुख होता है।

7.6.2 सरल समाजों में धर्म का राजनीतिक पहलू

सरल समाजों में धर्म के दो प्रकार्य हैं, पहला प्रकार्य पर्यावरण से संबंधित है तो दूसरा प्रकार्य राजनैतिक और समाजिक पक्ष है। पर्यावरण संबंधी प्रकार्य मूल रूप से व्यक्ति और प्रकृति के बीच के पारिस्थितिक संबंधों पर आधारित होता है। इस सिद्धांत में यह तथ्य निहित है की प्रकृति से किस प्रकार जुड़ना चाहिए। धर्म सामाजिक – राजनैतिक प्रकार्य करता है। यह लोगों को आपस में बांधता है और सत्ता को अर्थ और उसके साथ ही वैधता भी देता है।

राजनीतिक प्रणाली के दृष्टिकोण से उच्च पशुपालक और कृषिपालक समाजों में सत्ता के उच्च तरीके स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। ये धर्म सिद्धांत, अनुष्ठान, संस्कार और पूजा के रूप में होते हैं। यद्यपि नैतिकता को सीधे तौर पर धर्म से नहीं जोड़ा जाता है, बल्कि काफी बड़े पैमाने पर मानव के व्यवहार को नियमित करता है या अपेक्षा की जाती है। इसके अंतर्गत किये जाने वाले व्यवहार और नहीं किये जाने वाले व्यवहार शामिल होते हैं। सरल समाजों में, धर्म व्यक्ति को उसके सभी कार्यों के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराता है।

बोध प्रश्न 2

1) राज्यहीन समाज के चरण क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) छोटे शिकारी बड़े जानवरों का शिकार करते हैं।

हाँ नहीं

3) खंडीय समाजों में धर्म के कौन से प्रकार्य होते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.7 सारांश

हमने देखा है कि खंडीय समाजों में केंद्री.त सत्ता या शक्ति नहीं होती है। इनमें शायद ही कोई प्रशासनिक व्यवस्था हों । कोई न्यायिक संस्थान भी नहीं होता है। धन –दौलत, पद, और प्रतिष्ठा के आधार पर भेदभाव भी गायब है। इन समाजों में अफ्रीका के नुएर और तालेन्सी जनजातियां शामिल हैं। भारत में भीलों, ओराओं और संथालों को भी इसी के अंतर्गत रखा जाता है।

सरकार के बिना ऐसे समाजों में विधि व्यवस्था कैसी रखी जाती है? राजनीतिक संबंधों का नियंत्रण खंडीय वंश परम्परा के द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय वर्गों के बीच सम्पन्न होता है। नातेदारी प्रणाली का राजनीतिक संगठनों के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण होता है।ऐसा इसलिए होता है क्योंकि क्षेत्रीय वर्गों और वंश परम्परा के आधार पर वर्गों के बीच एक संबंध होता है।

इस प्रकार के समाजों में राजनीतिक पद के साथ कोई आर्थिक विशेषाधिकार नहीं जुड़ा होता है। धन, दौलत, पद, प्रतिष्ठा को तो प्राप्त कर सकते हैं और राजनीतिक नेतृत्व प्राप्त करने में मदद भी कर सकता है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि खंडीय समाजों में धन – दौलत के कारण ही बेहतर स्थिति अर्जित की जाती है। पहले यह माना जाता था कि खंडीय समाज ऐसे व्यक्तियों के नियंत्रण में होते थे जिनके पास पर्याप्त पद और प्रतिष्ठा होती थी। उन्हें युद्ध के द्वारा विजय हासिल करना होता था या वीजित राज्य को अधिग्रहण किया जाता था । इस सिद्धांत पर सवाल उठाया गया है और आमतौर पर अब इसे स्वीकार नहीं किया जाता है।

इसके अलावा इन समाजों में नियंत्रण करने वाली कोई संस्था या कोई संगठन या कोई

वर्ग या कोई खंड नहीं होता था। शक्ति प्राप्त करने का जरिया दोनों पक्षों के लिए बल प्रयोग ही था। महत्वपूर्ण तथ्य के रूप में सह–अस्तित्व भी है क्योंकि यदि एक खंड दूसरे को हराता है तो वह इस पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास नहीं करता है। चूंकि इसके लिए कोई प्रशासनिक सहायता नहीं मिलती है, और इसलिए ऐसा नहीं सम्भव भी नहीं होता। कोई व्यक्ति या समूह सर्व शक्तिमान नहीं होता है। इस प्रकार पृथक्करण के प्रत्येक स्तर पर संतुलन के द्वारा स्थिरता बनाए रखी जाती है। समाजिक व्यवस्था में कई बार स्वार्थ आधारित स्थिरता भी देखने को मिलती है।

इससे अधिक, एकता और परस्पर सामंजस्य इन समाजों में समान प्रतीकों के माध्यम से आते हैं। इनमें मिथक, मत –मतान्तर, व्यक्तित्व, पवित्र स्थान आदि शामिल हैं। इन्हें अपने आप में अंतिम मूल्य माना जाता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि खंडीय समाजों में एक आंतरिक सामंजस्य प्रणाली है जो मजबूत और प्रभावी भी है। वे 'खंडीय' हैं, लेकिन वे दक्षता बनाने वाले किसी भी घटक का अभाव नहीं होने देते हैं। ये समाज, वास्तव में, पूर्ण रूप से विकसित होते हैं और राजनीतिक इकाइयाँ भी विकसित होती हैं और इन्हें पूर्ण विकसित ही माना जाना चाहिए।

7.8 शब्दावली

कुल : एक सामान्य पूर्वज वाला नातेदारी समूह।

सजातीय विवाह : एक सामाजिक प्रथा जिसके अनुसार एक विशेष समूह के भीतर ही शादी करने की अनुमति होती है।

विजातीय विवाह : एक सामाजिक प्रथा जिसके अनुसार एक विशेष समूह के बाहर ही शादी करने की अनुमति होती है।

नातेदारी : ऐसा सामाजिक संबंध जिसमें रक्त संबंध और वैवाहिक संबंध दोनों शामिल हों।

वंश : माता या पिता की ओर से पूर्वजों की परम्परा पर आधारित वंश का भाग।

मातृसत्तात्मक : एक सामाजिक व्यवस्था जिसमें महिला सत्ता और महिला अधिकार पर आधारित हों।

मातृवंश : एक ऐसा सामाजिक व्यवस्था जहां वंश मां के नाम पर चलता हों।

पितृसत्तात्मक : एक ऐसा सामाजिक व्यवस्था जिसमें पुरुष सत्ता और पुरुष अधिकार पर आधारित हों।

पितृवंश : एक ऐसा सामाजिक व्यवस्था जहाँ वंश पिता के नाम पर चलता हों।

अनुशस्ति : समाज द्वारा निर्धारित कुछ प्रतिबंध ।

7.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Evans-Pritchard, E.E., 1940. The Nuer.Oxford University Press: Oxford. (Chapter IV).

Gluckman, Max. 1965. Politics, Law and Ritual in Tribal Society. Basil Blackwell: Oxford. (Chapters 3 and 4).

Vidyarthi, L.P. and Rai, B.K., 1985. The Tribal Culture of India (2nd Ed.). Concept: Delhi. (Chapter 2, pp. 25 and Chapter 5, pp. 195-235).

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) खंडीय समाज की कोई कठोर सीमा नहीं होती है। इसमें केवल मौखिक परंपराएं होती हैं। कई बार एक ही व्यक्ति पूरे जनजाति का मुखिया होता है। आर्थिक रूप से ये समाज प्रारम्भिक अवस्था में है।

2) हां

3) (i) पुरातत्व रिकॉर्ड

   (ii) मिशनरियों, यात्रियों और प्रशासकों द्वारा निर्मित साहित्य

   (iii) मानवविज्ञानी द्वारा लिखित मोनोग्राफ

अपनी प्रगति की जाँच करें: 2

1) खंडीय समाजों में एक ही पूवर्ज वाले दूसरी या तीसरी पीढ़ी में चलकर किसी कारण से विखंडन हो जाता है। वे एक – –दुसरे से विरोधी इकाइयों के रूप में व्यवहार करते हैं। हालांकि जब अन्य खंडीय समाजों से खतरा होता है, तो वे आपस में एकत्रित हैं।

2) i) संथाल

   ii) ओरांव

   iii) भील

3) संध्याकालीन सभाओं के द्वारा अनौपचारिक नियंत्रण स्थापित किया जाता है। इन सभाओं में की जाने वाली आलोचना बहुत तीखी और प्रभावी होती हैं। सार्वजनिक अस्वीकृति के द्वारा भी अनौपचारिक नियंत्रण किया जाता है।

4) नहीं

5) नहीं

अपनी प्रगति की जाँच करें: बोध प्रश्न 3

1) क) प्रारंभिक कृषि

   ख) विकसित कृषि

   ग) सर्वाधिक विकसित कृषि

2) नहीं

3) धर्म का एक कार्य पारिस्थितिक उद्देश्य भी होता है। इसके अलावे सामाजिक प्रकार्य भी करता है और लोगों को एक साथ बांधता भी है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 8 सर्वसत्तावाद*

इकाई की संरचना

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 सर्वसत्तावादी सरकार का स्वरूप

8.2.1 संपूर्ण नियंत्रण की सरकार

8.2.2 सर्वसत्तावादः सभ्यता उन्मूलन का माध्यम

8.3 सर्वसत्तावाद का उदय (1919–1938)

8.3.1 तानाशाही

8.3.2 इटली में फासीवाद

8.3.2.1 फासीवाद की प्रकृति

8.3.2.2 साम्यवाद की तुलना में फासीवाद

8.4 स्टालिन का सर्वसत्तवादी राज्य

8.5 जर्मनी में नाजीवाद

8.6 सर्वसत्तावाद की प्रमुख विशेषताएँ

8.7 सारांश

8.8 शब्दावली

8.9 उपयोगी पुस्तकें

8.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगेः

- सर्वसत्तावादी सरकार के प्रकारों को जानने में;
- सर्वसत्तावादी सरकार के विकास की विवेचना करने में;
- स्टालिन के सर्वसत्तावादी सरकार की विशेषता जानने में; तथा
- जर्मनी में नाजीवादी सरकार की विवेचना करना करने में।

8.1 प्रस्तावना

इस श्रृंखला की पूर्व की इकाईयों में हमने खंडीय प्रणाली पर विचार किया। इस इकाई में हम सर्वसत्तावादी राजनीतिक व्यवस्था की विवेचना करेंगे। साथ ही, हम इस इकाई की

* प्रो. मनीषा त्रिपाठी पाण्डे द्वारा लिखित

शुरूआत सर्वसत्तावादः सरकार के स्वरूप, सर्वसत्तावाद के उदय (1919–1939), इटली में फासीवाद, स्टालिन का सर्वसत्तावादी राज्य तथा जर्मनी में नारीवाद से करेंगे। इसके बाद हम सर्वसत्तावाद के प्रमुख लक्षणों की भी विवचेना करेंगे।

किसी भी सरकार के स्वरूप की तुलना करने की विधियों की दो श्रेणियों में विभाजित किया है– लोकतंत्र और तानाशाही। जहाँ लोकतंत्र में जनता नेता को सलाह देती है कि उसे क्या करना चाहिए वहीं तानाशाही में नेता जनता को। तानाशाही सरकार का ऐसा स्पस्वरूप है जिसमें शासक बिना जनता के सहमति के शासन करता है। इसलिए अधिकतर तानाशाही शासन सर्वसत्तावादी शासन ही है। अतः सर्वसत्तावादी सरकार एक ऐसी सरकार है जो अपने शासितों के ऊपर संपूर्ण राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नियंत्रण कायम करते हैं तथा जिनका मार्गदर्शन करश्मिाई नेताओं द्वारा किया जाता है। लेकिन सभी तानाशाह मुसोलिनी की तरह फासीवादी नहीं होते। फासीवाद दक्षिण पंथी सर्वसत्तावाद का एक रूप है जो राज्य के हित के लिए व्यक्ति की अधीनता पर बल देता है।

8.2 सर्वसत्तावादीः सरकार का स्वरूप

8.2.1 संपूर्ण नियंत्राण की सरकार

सर्वसत्तावाद सरकार का ऐसा स्वरूप है जिसमें सरकार केन्द्र एवं राज्य की शक्तियों पर संपूर्ण नियंत्रण स्थापित कर सार्वजनिक और निजी व्यक्ति के जीवन के हर पहलू को नियंत्रित करती है। इसके विपरित, लोकतांत्रिक सरकार पर जनता का नियंत्रण होता है। दरअसल, सर्वसत्तावादी सरकार, सरकार और समाज के बीच की रेखा को मिटाने का प्रयास करती है। इस सरकार की विचारधारा होती है कि जनता इन्हें मानने को बाध्य हो। ऐसा अधिकांशतः एक सक्रीय नेता और एक राजनीतिक दाम के नेतृत्व में किया जाता है।

जन संचार माध्यम सर्वसत्तावादी सरकार के उद्देश्यों एवं नीतियों के प्रसार में सहायता करते हैं और इसकी नीतियों का समर्थन करते हैं। इसके अंतर्गत लोगों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए निगरानी तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है। अंततः, पुलिसिया दमन एवं हिंसा सर्वसत्तावादी सरकार के उद्देश्यों का विरोध करने वाली जनता का दमन करती हैं।

सर्वसत्तावाद पश्चिमी जनतंत्र द्वारा स्वीकृत बहूमूल्य मूल्यों जैसे– तर्कशीलता, स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा एवं वैयक्तिक मूल्यों को चुनौती देता है। संपूर्ण राष्ट्र पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए, सर्वसत्तावादी नेता नियंत्रण एवं विश्वास दिलाने की विधियों का सहारा लेते हैं। इन पद्धतियों में आंतक, मतारोपण, प्रचार, प्रतिबंध और धार्मिक और सामुदायिक जमावड़ा सम्मिलित हैं।

मुसोलिनी ने प्रथम सर्वसत्तावादी राज्य का निर्माण किया। सरकार के इस स्वरूप में, एक राजनीतिक दल की तानाशाही नागरिकों के जीवन के समस्त पहलुओं को निर्धारित करने का प्रयास करती है। दूसरे तानाशाहों, विशेषकर स्टालिन और हिटलर ने, मुसोलिनी के मार्ग का अनुसरण किया। मुसोलिनी के शासन की प्रवृत्ति फासीवादी था, वैसा ही हिटलर का भी शासन था, लेकिन अन्य विचारधाराओं के अंतगर्त भी सर्वसत्तावादी सरकारों का उद्भव होता है, जैसा कि स्टालिन के समय में सोवियत संघ में साम्यवाद।

माइकल हलबैर्स्टम (1999) सर्वसत्तावाद के दो महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों में भेद करते हुए बताते हैं किः

1. उदारवादी दृष्टिकोण सर्वसत्तावाद को अपने प्रतिवाद के रूप में देखता है। कार्ल फ्रेडरिक द्वारा सर्वसत्तावाद की परिभाषा उनकी पुस्तक *''टोटैलिटेरियन डिक्टेटरशिप एंड ऑटोक्रेसी''* में इस दृष्टिकोण का इस्तेमाल करती है। इसी दृष्टिकोण के अनुसारः

   क) सर्वसत्तावाद सहमति नहीं बल्कि बल द्वारा संचालित शासन है। सर्वसत्तावाद सभी प्रकार की राजनीतिक स्वतंत्रता, जनतांत्रिक प्रक्रिया तथा वैधानिक व्यवस्था का उन्मूलन करते हुए शासकों द्वारा स्थापित मतों तथा राजनीतिक दलों को सर्वोपरि मानते हुए अनियंत्रित तरीके से सत्ता का प्रयोग कर समस्त राज्यों और संस्थानों पर अपने वर्चस्व को बनाए रखता है।

   ख) सर्वसत्तावाद चेतना की स्वतंत्रता का हनन करता है। यह बलपूर्वक एक विचारधारा को थोपकर संपूर्ण वैयक्तिक चेतना पर नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश करता है।

   ग) सर्वसत्तावाद सामुदायिक जीवन के प्रत्येक पहलुओं का राजनीति करण करके सार्वजनिक और निजी जीवन के बीच की रेखा को समाप्त करना चाहती है।

   घ) सर्वसत्तावादी शासन अतार्किक तथा अत्यधिक तार्किक दोनों का ही सम्मिलित रूप है। यह वास्तव में अतार्किक इसलिए भी है क्योंकि यह अर्ध–धार्मिक भावनाओं के द्वारा नीतियों के लिए समर्थन सामुदायिक हितों को उभारता है जो कहीं न कहीं व्यक्तिगत तथा सामुदायिक हितों से बिल्कुल परे होता है। यदि तार्किक पक्ष की बात करे तो, सत्ता को बनाए रखने के लिए यह पक्ष प्रचार तथा जनसंख्या नियंत्रण जैसी वैज्ञानिक पद्धति का इस्तेमाल कर अपने मत की तार्किकता और आंतरिक संगति को बनाए रखने का प्रयास करती है।

2. इसका दूसरा सैद्धांतिक दृष्टिकोण सर्वसत्तावाद को आधुनिकता के संकट से उत्पन्न परिणाम और चरमबिंदु के रूप में देखता है। हन्ना अरेण्ट का दृष्टिकोण इसका बेहतर उदाहरण है। इनका मानना है कि सर्वसत्तावाद मुक्ति, आधुनिक तार्किकीकरण, जीवन के लौकिकीकरण तथा समाज के जनतांत्रिकीकरण की आलोचनात्मक परियोजना से उत्पन्न ''लुप्त जगत'' का परिणाम है।

हाना अरेण्ट की पुस्तक ''द ओरिजिन ऑफ टोटैलिटेरियनिडम उन ऐतिहासिक परिस्थितियों का विवेचना करती है कि जिनके कारण 20वीं शताब्दी में सर्वसत्तावाद का उद्‌भव हुआ। इसे तीन भागों में बाँटा गया हैः यहूदी विरोधवाद, साम्राज्यवाद और सर्वसत्तावाद। अरेण्ट विवेचना करती हैं कि क्यों और कैसे यहूदियों ने नाज़ीर और सर्वसत्तावादी प्रचार में अहम भूमिका निभाया। साथ ही, यह भी बताती हैं कि कैसे राष्ट्र–राज्य का विघटन 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में साम्राज्यवाद से संबंधित है। अरेण्ट तर्क देती है कि बुर्जुआ वर्ग के नए राजनीतिक गठन नें, जो चल रहे आंदोलनों एवं संचय की अवधारणा से प्रेरित थे, ने आधुनिक समाज के प्रमुख विचारधारा के रूप में प्रजातिवाद एवं नौकरशाही को बढ़ावा दिया। यहीं विशेषता 20वीं शताब्दी में सर्वसत्तावादी आंदोलन के कारण बने। अंततः अरेण्ट कहती हैं कि आंतक ही सर्वसत्तावाद का सार है तथा इसका उद्देश्य मानवीय स्वच्छंदता को पूर्ण रूप से समाप्त करना है। परंतु अरेण्ट यह आशा करती हैं कि मानवता, इस विभीशिका पर अपने आने वाली नयी पीढ़ी के अंर्तनिहित राजनीतिक प्रक्रियाओं द्वारा, विजय प्राप्त कर लेगी।

बॉक्स 1

जॉर्ज ऑरवेल ने अपने उपन्यास '1984' में सर्वसत्तावादी सरकार की विभीषिका की व्याख्या विस्तार से की है। इसमें एक ऐसी दुनिया का चित्रण है जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं निजत्व को समाप्त कर दिया गया। ऐसे संसार का निर्माण संभवतः आधुनिक तकनीक द्वारा किया गया है। यहाँ तक कि आम लोगों के घरों में कैमरे लगे हुए है जिससे लगातार उनकी गतिविधियों पर नजर रखी जाती हैं।

ऑरवेल का कालजयी उपन्यास '1984' *ओसेनिया* नामक अँधेरी सर्वसत्तावादी और अधिनायकवादी दुनिया का काल्पनिक चित्रण करता है। ओसैनिया में सत्ताधारी दल एक अधिनायक वादी और सर्वसत्तावादी है जिसका नेतृत्व बिग ब्रदर (बड़े भाई) करता है। यह ओसैनिया में जनता का इतिहास और भाषा से लेकर सबकुछ नियंत्रित करता है। यह स्वतंत्र यौनसंबंधों, विचारों और व्यक्तिगत चिंतन पर प्रतिबंध लगाती है। यह राज्य आंतरिक दल के अभिजात वर्गों द्वारा संचालित होता है। यह समाजवादी दुनिया की परिकल्पना का विचार पुलिस द्वारा नियंत्रित करती है और बाह्य दल के सदस्यों का टेलीस्क्रीन नामक तकनीक के माध्यम से कड़ी निगरानी करते हैं। इस पार्टी के तीन नारे क्रमशः 'युद्ध ही शांति है।', 'स्वतंत्रता गुलामी है।', और 'अज्ञानता ही शक्ति हैं, जो। ओसैनिया के दमनकारी राजनीतिक परिदृश्य का चित्र खींचते हैं जिसमें युद्ध अंतहीन है, स्वतंत्रता का दमन कर दिया जाता है, और जनता को अधीनता का शिकार बना दिया जाता है। वर्तमान समय के समाज में भी, ऐसे सर्वसत्तावादी शासन का अस्तित्व है जिसमें कोई 'बड़ा भाई' (बिग ब्रदर) हमेशा निगरानी करते हैं और जनता की पहरेदारी कर रहें हैं। 2019 में उत्तर कोरिया ऐसे ही सर्वसत्तावादी और ओरवेलियन राज्य के अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं।

8.2.2 सर्वसत्तावादः सभ्यता उन्मूलक संस्था

एरिक हॉब्सबम (1997), सभ्यता (पुर्नजागरण) और बर्बरता (अंधकार) के बीच विरोधाभास बताते साथ करते हुए कहते हैं कि आधुनिक काल में सभ्यता मुख्यतः नियमों की व्यवस्था, नैतिक व्यवहार तथा तार्किकता का समागम है। सभ्यता का बिखराव प्रथम विश्वयुद्ध से शुरू होकर फासीवाद और नाजीवाद के उदय के साथ द्वितीय विश्वयुद्ध तक जारी रहता है। 19वीं शताब्दी की सभ्यता रूस में बोल्शेविकों के द्वारा सत्ता पर कब्ज़ा और लेनिनवादी मार्क्सवादी के प्रसार के कारण मुख्य रूप से विकसित नहीं हो सकी। दरअसल यही समय सर्वसत्तावाद के प्रारंभ का था जिसकी वैकल्पिक अभिव्यक्तियाँ फासीवाद और नाजीवाद थीं। इस प्रकार सर्वसत्तावादी खुद से प्रारंभ नहीं होता बल्कि यह एक ऐतिहासिक दुर्घटना थी। सर्वसत्तावाद और युद्ध का सबसे बड़ा शिकार सत्य और तार्किकता का ही हुआ। नॉर्मन डेविस के अनुसार, ''पश्चिमी जनतंत्र के महायुद्ध में विजयी होने के बावजूद, सबसे अधिक गतिशील राजनीतिक उत्पाद के रूप में पश्चिमी विरोधी, उदारवाद विरोधी और जनतंत्र विरोधी सर्वसत्तावाद का दानव ही निर्मित हो सका।'' हॉब्सबम के अनुसार, सभ्यता के विघटन के साथ ही हमने बर्बरता के नवीनीकृत राज्य में प्रवेश कर लिया। दूसरे शब्दों में, सर्वसत्तावाद सभ्यता विरोध का प्रमुख माध्यम बना, और साथ साथ वैश्वीकरण और उपनिवेशवाद का भी।

8.3 सर्वसत्तावाद का उदय (1919–1939)

प्रथम विश्व युद्ध की तबाही ने पश्चिमी में पुनर्जागरण से पनपी आशाओं को चकनाचूर कर दिया और पूरे विश्व के स्वरूप में भयानक बदलाव हुए। तकनीकी परिवर्तनों और महामंदी

के अलावा, 20वीं शताब्दी में यूरोप ने विभिन्न विचारधारा जैसे अधिनायकवादी शासन और सर्वसत्तावादी सरकारों के अंतर्गत इटली, सोवियत संघ और जर्मनी में क्रमशः फासीवाद, साम्यवाद और नाजीवाद जैसे विचारधारा का उद्‌भव देखा।

20 वीं शताब्दी के प्रारंभिक चरण के तीन सर्वसत्तावादी राज्यः इटली, सोवियत संघ, और जर्मनी

देश	सत्ता में तानाशाह	विचारधारा	आंतकी कार्यनीति के उदाहरण
इटली	1922 में बेनीतो मुसोलिनी सत्ता में	फासीवादः कट्टर राष्ट्रवाद	काले कुर्ते पहने फासीवादियों द्वारा असहमति की आवाजों का दमन
सोवियत	1924 में जोसेफ स्टालिन सत्ता में	कम्युनिस्ट	स्टालिन द्वारा लाखों लोगों को श्रम शिविरों में भेजना।
जर्मनी	1933 में एडॉल्फ हिटलर सत्ता में	फासीवाद; नफरत की नस्लीय नीति, विषेशकर यहूदी विरोधी	नाजियों द्वारा जर्मन यहूदियों को प्रतिबंधित और आंतकित किया जाना।

8.3.1 तानाशाही

मुसोलिनी, स्टालिन और हिटलर अति चर्चित तानाशाह थे। इनमें सभी ने राजनीतिक सत्ता को अपने हाथों में ले लिया तथा इस सत्ता को बनाए रखने के लिए पुलिस या सेना का इस्तेमाल क्रूरतापूर्वक उपयोग किया। इनमें से कोई भी जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं रहे। इनके अलावा, प्राचीन रोम में जूलियस सीजर, स्पेन में फ्रांसिस्कों फ्रैंको और क्यूबा में फिदेल कास्त्रों तानाशाहों के अन्य उदाहरणों में से हैं।

तानाशाहों के उदाहरण

जूलियस सीजर, प्राचीन रोम

रोमन गणराज्य में, रोमन सीनेट ने गृह संकट के काल में एक उच्च अधिकारी के रूप में एक तानाशाह को नियुक्त किया था। तानाशाहों के पास असीम शक्ति होती थी, लेकिन सामान्यतः उनका कार्यकाल छः महीने ही होता था।

कुछ रोमन शासकों नें, जिसमें जूलियस सीजर भी था, ने इस कानून को काफी बाध्यकारी पाया। 49ई.पूर्व में, सीजर और उसकी सेना ने गृह युद्ध के बाद रोम को अपने नियंत्रण में ले लिया और खुद को तानाशाह बनाए रखने लायक बहुत शक्ति हासिल कर ली थी। सीनेट में उसके अनेक शत्रु भी हो गए थे, जिनमें से कई अधिकांश ने उसकी हत्या की योजना को सफल बनाने में हिस्सा भी लिया।

फ्रासिस फ्रैंको, स्पेन

स्पेन में, 1930 ई. के गृह युद्ध के दौरान, स्पेन के गणतंत्रीय (रिपब्लिकन) सरकार को बचाए रखने के लिए राजभक्तों ने युद्ध किए। उन्होंने फ्रांसिस फ्रैंको के नेतृत्व वाली रूढ़िवादी राष्ट्रवादी सैन्य समूहों के खिलाफ युद्ध किया। फ्रैंको ने हिटलर और मुसोलिनी से सैन्य सहायता ली। फ्रैंको ने अपने विजय के बाद फासीवाद आधारित तानाशाही कायम की। उसने हजारों पूर्ववती राजभक्तों को कारावास में डाल दिया और हत्या करवा दी। वह 1970 ई. तक सत्ता पर जमा रहा और जनता की

असहमतियों का दमन करते हुए अपने सहायक तत्वों के स्वार्थों की हर संभव पूर्तिक करता रहा।

फिदेल कास्त्रों, क्यूबा

1952 में, क्यूबा में एक सैनिक विद्रोह ने फलजेन्सियों बतिस्ता को सत्ता में ले आया। बतिस्ता ने सरकारी भ्रष्टाचार को खत्म करने का वादा किया। इसके विपरीत, उसने सरकारी खजाना लूट लिया, प्रेस का दमन कर दिया तथा अपने विपक्षियों को जेल में डाल दिया। 1956 ई. में, फिदेल कास्त्रों और एक छोटे विद्रोही समूह ने मिलकर बतिस्ता शासन के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध शुरू कर दिया। 1959 ई. में, बतिस्ता देश छोड़कर भाग गया और कास्त्रो सत्ता में आ गए। हालांकि, कास्त्रों ने राजनीतिक और नागरिक अधिकारो को पुर्नस्थापित नहीं किया, जैसा कि उन्होंने वादा किया था। इसके विरीत, उन्होंने साम्यवादी तानाशाही स्थापित कर दी। उनके शासन में राजनीतिक विरोधियों की हत्या करवा दी और उनसे धोखेबाजी के शक में उन कइयों को कारागार में डाल कर उनकी हत्या करवा दी। सोवियत संघ ने क्यूबा को आर्थिक और सैनिक सहायता देकर कास्त्रों की सराहना की।

8.3.2 इटली में फासीवाद

1920 के प्रारंभ में, इटली में बेनीतो मुसोलिनी नामक एक नए नेता का उदय हुआ। इटली की जनता मुसोलिनी द्वारा इटली में स्थिरता और गौरव लाने के वादे से काफी प्रभावित हुई। एक समाजवादी लोहार और शिक्षक का बेटा होने के कारण मुसोलिनी अपने जवानी में समाजवादी था। बाद में, उसने कट्टर राष्ट्रवाद के लिए समाजवाद को त्याग दिया। 1919 में, उसने सेवा निवृत्त सैनिकों और असंतुष्ट इटली वासियों को फासीवादी पार्टी में संगठित किया। उसने इस शब्द को लैटिन के 'फासीज' से लिया था, जिसका अर्थ था लकडियों का गट्ठर जो कुल्हाड़ी के चारों तरफ बंधा होता था। प्राचीन रोम में, 'फासीज' एकता तथा अधिकार का प्रतीक है।

मुसोलिनी एक जोशिला तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का आदमी था। उसने भ्रष्टचार का अंत करने, शांति व्यवस्था को बहाल करने तथा रोमन गौरव को पुर्नस्थापित करने का वादा किया था। उसने अपने लड़ाकू दस्तों को 'ब्लैक शर्ट' नामक संगठन के रूप में एकत्रित किया, एक ऐसा उग्र संगठन जनतांत्रिक प्रक्रिया को त्याग कर हिंसात्मक गतिविधि को अपनाते थे। इन्होंने समाजवादी जूलूसों, वामंपथी प्रेस तथा किसानों की सहकारी समितियों को नष्ट किया। फासीवादी समूहों ने उत्तरी इटली में निर्वाचित अधिकारियों को बेदखल करने में के लिए आंतक और डर का सहारा लिया। अधिकतर इटलीवासियों ने इन आक्रामक प्रक्रियाओं को अपना लिया, क्योंकि संवैधानिक सरकार में से उनका भी विश्वास उठ गया था।

1922 ई. में मुसोलिनी प्रधानमंत्री बना तथा उसने ड्यूक द्वितीय की उपाधि, जिसका अर्थ नेता होता था, धारण की। उसने अपने विपक्षी पार्टियों का दमन किया, प्रेस को दबाया, चुनाव में धांधली की चुनाव के अधिकारियों की जगह फासीवादी समर्थकों से बदल दिया। सिद्धांतों में, इटली संसदीय राजतंत्र बनी रही। वास्तव में, यह एक आतंक आधारित तानाशाही था। आलोचना करने वालों को जेल, निर्वासन दे दिया जाता था या उनकी हत्या करवा दियादी जाता जाती था। थी। गुप्त पुलिस दस्ते तथा प्रचारतंत्र द्वारा शासन को बचाए रखा गया था।

मुसोलिनी ने अर्थव्यवस्था को राज्य नियंत्रण में ले लिया और उद्योगों कृषि और व्यापार पर

फासिवादियों का नियंत्रण था। राज्य के प्रति वफादारी को गौरवान्वित किया गया। 'विश्वास', 'अज्ञानुपालन', और 'संघर्ष' को नारे के रूप में इटली के गौरव को बचाने एवं संघर्ष के लिए इस्तेमाल किया गया। औरतों को नौकरी से बाहर कर दिया गया। प्रचार अभियान के रूप में, जर्मन माताओं को अधिक बच्चे जन्म देने एवं पालने के लिए पुरस्कृत किया गया। 1920 के दशक में, सत्ता में मुसोलिनी के उभार को अन्य जगतों में एक उदाहरण के रूप में अपनाया जाने लगा।

8.3.2.1 फासीवाद की प्रकृति

सामान्यत:, फासीवादी सरकार को किसी साम्यवादी सरकार की तुलना में बल्कि केन्द्रीकृत तथा अधिनायकवादी सरकार के रूप में जाना जाता है, जिसमें राज्य की नीतियाँ हमेशा व्यक्ति से ऊपर तथा आधारभूत मानवाधिकारों के लिए विनाशकारी होती हे। यद्यपि, 1920 और 1930 के दशकों में फासीवाद का विभिन्न देशों में विभिन्न अर्थ था। फिर भी, सभी प्रकार के फासीवाद स्वरूपों में मौलिक विशेषताएँ एक समान थीं। इनकी जड़े कट्टर राष्ट्रवाद में धंसी हुई थी। फासीवादी राज्य गौरवशाली कार्यों, हिंसा, अनुशासन तथा राज्य के प्रति अंधविश्वास को तरजीह और गोरवान्वित करते थे। उनकी सहमति उग्र रूप से क्षेत्र विस्तार के लिए भी था। वे युद्धोन्मान को जीवनशैली का अभिन्न अंग मानते थे। फासीवादी अलोकतांत्रिक भी थे। तर्क, समानता और स्वतंत्रता में उनका कोई भरोसा नहीं था। उनके अनुसार, लोकतंत्र व्यक्ति को भ्रष्टाचार तथा कमजोरी की तरफ बढ़ाता है तथा व्यक्ति या वर्ग हितों को राष्ट्र हित से भी ऊपर रखता है। इसके विपरीत, फासीवादी राज्य की सर्वोच्चता और भावना को सर्वश्रेष्ठ मानते थे। भले ही, फासीवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विचारों के खिलाफ था, लेकिन यह बहुतों का पसंद था। इसका कारण है कि इससने लोगों को मजबतू व स्थायी सरकार देने का वादा किया था। परंतु यह एक हिंसक तथा पंगु लोकतांत्रिक इटली के रूप में उभरकर सामने आया। मुसोलिनी अराजकता एवं निराशा के दौर में भी शक्ति तथा आत्मविश्वास के रूप में खुद को प्रदर्शित करता था।

8.3.2.2 साम्यवाद की तुलना में फासीवाद

फासीवादी समाजवादियों के कट्टर दुश्मन थे। जहाँ साम्यवादियों ने अंर्तराष्ट्रीय परिवर्तन के लिए काम किया वहीं फासीवादी राष्ट्रवादी लक्ष्यों का अनुसरण करते रहे। फासीवादी वर्ग में विभाजित समाज का समर्थन करते थे। उनके सहयोगी व्यवसायी, नेता, धनी, भूस्वामी और निम्न वर्गों के बीच होते थे। वहीं साम्यवादियों ने वर्गविहीन समाज को सामने रखने का प्रयास किया। उन्होंने शहरी और कृषिक मजदूरों के समर्थन को भी हासिल किया।

इन अंतरों के बावजूद, इन दोनों विचारधाराओं में कुछ समानता अवश्य थीं। दोनों ने ही राज्य के प्रति अंधभक्ति, राज्य को मूर्त रूप देकर तथा करिश्माई नेतृत्व का सहारा लेकर राज्य का नेतृत्व प्राप्त किया। दोनों ने ही अपनी शक्ति को संरक्षित करने के लिए अतिवादी ताकतों का सहारा लिया। दोनों ने ही आर्थिक रूप से कठिन दौर में सामाजिक परिवर्तन के अतिवादी कार्यक्रम को प्रोत्साहित कर अपना विकास किया। दोनों ही दलों में, एक अभिजात्य वर्गों के दल ने राष्ट्रीय हित के नाम पर शासन पर अधिकार होने का दावा किया।

8.4 स्टालिन का सर्वसत्तावादी राज्य

कार्ल मार्क्स के अनुसार साम्यवाद के भीतर राज्य आखिरकार स्वयं ही विलुप्त हो जाएँगे। स्टालिन के काल में ठीक इसके विपरित हुआ। उसने सोवियत संघ को एक शक्तिशाली और जटिल नौकरशाही द्वारा सर्वसत्तवादी राज्य में बदल दिया। स्टाालिन की पंचवर्षीय

योजनाओं ने एक उच्च लक्ष्य को निर्धारित किया तथा तमाम आर्थिक गतिविधियों को सरकारी नियंत्रण में ले लिया।

सरकार ही सभी व्यापारों पर नियंत्रण रखती थी तथा समस्त साधनों का वितरण भी करती थी। अतः पूँजीवादी व्यवस्था के विरोध के वितरीतविपरीत, सोवियत संघ ने एक नियंत्रित अर्थव्यवस्था विकसित की, जिससे सरकारी अधिकारी सभी निर्णय लेते थे। स्टालिन के द्वारा किए गए कृषि के क्षेत्र में बलपूर्वक सामूहिकरण के कारण अशांति का माहौल उत्पन्न हुआ जिसे पुलिस द्वारा दबा दिया गया। स्टालिन चाहता था कि किसान राज्य अधिकृत खेत या सामूहीकरण या किसानों के समूह द्वारा अधिकृत और उनके द्वारा संचालित बड़े खेतों पर काम करें। राज्य ने खेती के सभी उत्पाद के सभी दामों के साथ–साथ उसकी पहुँच को भी नियंत्रित कर दिया। स्टालिन ने कुलकों या धनी किसानों जिन्होंने अपना जमीन देने से इनकार किया उसके प्रति कड़ा रूख अपनाया और उनको श्रम शिविरों में डाल दिया।

स्टालिन की कम्यूनिष्ट पार्टी की आज्ञा का पालन करवाने के लिए गुप्त पुलिस यातना और हिंसात्म्क शुद्धिकरण का इस्तेमाल करती थी। उसने सोवियत संघ के व्यक्तिगत जीवन पर भी अपना नियंत्रण बनाया। यहाँ तक कि सभी असहमतिपूर्ण आवाजों को कुचल दिया। अतः, वहाँ पर न कोई प्रेस बचा न आवाज उठाने का कोई साधन। व्यक्तियों को डराने के लिए आतंक का सहारा लिया गया तथा आलोचकों केा 'गलग' जैसे स्थान जो एक भयानक श्रम शिविर थ, पर भेज दिया जाता जहाँ अधिकतर लोग मर जाते थे। गुप्तचर पुलिस ने लाखों तथाकथित लाखों देशद्रोहियों को कैद किया एवं मार डाला। अतः, स्टालिन ने 1934 ई0 में महाशुद्धिकरण (Great Purge) की नीति अपनाई जिसके तहत उसके तमाम विरोधियों को आतंकित किया गया। उन हजारों बोल्शेविकों पर मुकदमा चलाया गया जिन्होंने कभी 1917 की क्रांति को खड़ा किया था एवं चुन–चुनकर प्रताड़ित किया गया।

वहीं साम्यवादियों ने सोवियत नागरिकों के विचारों को प्रचार और प्रतिबंधित व्यवस्था के माध्यम से नियंत्रित करने का प्रयास किया। अपने इर्द–गिर्द अपने ही मत समर्थकों के समूह को इकट्ठा किया। राज्य के दृष्टिकोण की पुष्टि के लिए, सोवियत के सभी कलाकार, लेखक, समाचार पत्र, रेडियो और चलचित्र को आधिकारिक तौर पर प्रतिबंध का सामना करना पड़ा।

स्टालिन ने रूसीकरण की भावना को उत्तेजित कर सोवियत संघ के सांस्कृतिक जीवन को भी नियंत्रित किया। यह वास्तव में राष्ट्रीय संस्कृति का रूसीकरण करके इन्हें अल्पसंख्यकों पर पूरी तरह से रूसी संस्कृति थोपने का स्वरूप सामने आया। इसके अतिरिक्त स्टालिन ने लोगों के दिमागों में अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए उनकी धार्मिक विश्वासों को नष्ट किया तथा उसे साम्यवादी विचारधारा में लाने का प्रयास किया। मार्क्स के विचारों के अनुसार, नास्तिकता ही राज्य की आधिकारिक नीति बन गई। मार्क्स और लेनिन की लेखनी को पवित्र ग्रंथ का दर्जा दिया गया तथा स्टालिन की प्रतिमा ने धार्मिक प्रतिमाओं का स्थान ले लिया। स्टालिन के आतंक और सांस्कृतिक तहस–नहस की नीति ने उन साम्यवादी वादों को उपहास में परिणत कर दिया। इस प्रकार, लेनिन के वादों के आगे साम्यवादी सच्चाई धाराशाही हो गई।

8.5 जर्मनी में नाजीवाद

1919 में, अडोल्फ हिटलर नामक एक सेवानिवृत्त सैनिक छोटे से चरमपंथी समूह का अंग

बना। कुछ ही दिनों में वह नाजी दल या राष्ट्रीय समाजवादी जर्मन वर्कर्स दल का निर्विवाद नेता चुन लिया गया। उसने 1923 में मुसोलिनी के उदाहरणों पर चलते हुए म्युनिख को कब्जे में करने का एक असफल प्रयास किया।

अतः उसे देशद्रोह के लिए जेल में डाल दिया गया। जेल में रहते हुए उसने '*मेन कैम्फ* (मेरा संघर्ष)' नाम पुस्तक लिखी। बाद में चलकर यही पुस्तक नाजीवाद के उद्देश्यों और विचारधारा का आधार बना। इस पुस्तक ने कट्टर राष्ट्रवाद, नस्लवाद और यहूदी विरोधी तत्त्वों को प्रदर्शित किया।

प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की हार के बाद हिटलर जर्मनी के पुनरूत्थान के लिए हर जगह एकीकृत व एक महान जर्मन राष्ट्र की बात करता। महामंदी ने बेरोजगारी को बढ़ावा दिया जिसमें नाजी सदस्यता को अचानक बढ़ा दिया। जेल से निकलने के बाद हिटलर का एक मात्र कार्य सेवानिवृत्त सैनिकों, मजदूरों, और निम्न मध्यम वर्ग और छोटे शहर के जर्मन निवासियों को अपील करना था ताकि वे राष्ट्र की भावना को समझें। उसने सर्वप्रथम मुआवजों के अंत तथा नौकरियाँ पैदा करने का वादा किया। रूढ़िवादियों के समर्थन से (जो साम्यवादी राजनीतिक शक्ति की वृद्धि से डरते थे) हिटलर 1933 में चांसलर नियुक्त हुआ। जर्मन चांसलर बनते ही उसने सबसे नागरिक अधिकारों को खत्म किया, उसके बाद समाजवादियों तथा साम्यवादियों को नष्ट किया तथा साथ ही राजनीतिक पार्टियों को भी बर्खास्त किया। इस प्रकार जर्मनी एकदलीय राज्य बन गया। उसने एक दक्ष परंतु क्रूर सत्तावादी सरकार का निर्माण किया। नाजियों ने जर्मनी के जीवन के सभी पहलुओं अर्थात् शिक्षा से लेकर धर्म तक पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। बुर्जुआ वर्ग की काली वर्दी कहलाने वाली टुकड़ी ने हिटलर के विभिन्न पहलुओं का प्रचार–प्रसार किया। हिटलर की गुप्तचर पुलिस, गेस्टापों ने उसके समस्त विरोधियों का समूल नाश कर दिया। स्कूल के पाठ्यक्रमों को फिर से लिखा गया एवं उनमें नाजीवादी नस्लीय विचारों को शामिल किया गया।

इटली के फासीवादियों की तरह, नाजियों ने भी औरतों की भूमिका को सीमित करने का प्रयास किया। यहूदी विरोधी उन्माद में, हिटलर ने जर्मनी से यहूदियों को खदेड़ना शुरू किया। उन्हें स्कूल में उपस्थित होने या शिक्षा देने, सरकारी नौकरी करने, कानून या चिकित्सा पेशे से या किताब छपवाने से वंचित कर दिया गया। नाजियों ने यहूदियों को लूटा–मारा और लोगों को भी ऐसा ही करने के लिए भड़काया। नाजियों ने इस कृत्य को जर्मन संस्कृति के शुद्धिकरण या पवित्रीकरण का नाम दिया।

नाजी जर्मनी

मार्टिन नियोमोलर, लूथर समर्थक मंत्री थे, नाजी नीतियों के खिलाफ प्रचार करने के कारण आखिरकार उन्हें जेल में डाल दिया गया। उन्होंने बाद में व्यक्त किया:

''नाजी ने पहले साम्यवादियों पर प्रहार के लिए आये के लिए और मैंने कुछ नहीं बोला क्योंकि में एक साम्यवादी नहीं था। फिर वे यहूदियों को खदेड़ने लिए आए, और तब भी मैंने कुछ नहीं बोला क्योंकि मैं यहूदी नहीं था। तब वे कैथोलिक के लिए और मैंने कुछ नहीं बोला क्योंकि मैं प्रोटेस्टेंट था। तब वो मेरे लिए आए और उस समय तक कोई भी बोलने के लिए बचा नहीं था।''

–मार्टिन नियमोलन, टाइम मैगजीन से उद्धृत

सर्वसत्तावादी राज्य का गठन

सर्वसत्तावादी इटली में, मुसोलिनी सरकार ने इटली के जीवन के प्रत्येक पक्ष को अपने अधीन करने का प्रयास किया। इसी तरह मुसोलिनी का सर्वसत्तावादी सरकार दूसरे राज्यों के लिए उदाहरण बन गया, यद्यपि इसका इटली में शासन उतना भी निरंकुश नहीं था जितना स्टालिन का सोवियत संघ में या हिटलर का जर्मनी में। लेकिन फिर भी, ये तीनों सरकारें समान विशेषताओं को साझा करती हैं:

- किसी एक नेता की अंधभक्ति के साथ एकल शासन व्यवस्था अर्थव्यवस्था पर राज्य का नियंत्रण
- पुलिस गुप्तचर तथा आंतक के सहारे राज्य की इच्छाओं को लागू करना
- सरकार का मीडिया पर नियंत्रण स्थापित कर लोगों को समझाया जाना तथा उन्हें प्रचार के माध्यम से एकत्रित किया जाना।
- स्कूलों और युवा संगठनों का इस्तेमाल कर बच्चों तक अपनी विचार धारा का प्रसार करना।
- असहमति का दृष्टिकोण रखने वाले कलाकारों और बौद्धिकों के लिए कड़ी दमन (सेन्सर) की व्यवस्था रखना।

वर्तमान में तानाशाही: उत्तर कोरिया का किम–जोंग–उन शासन

सरकार के स्परूप में तानाशाही आज के दौर में भी मौजूद है। उत्तर कोरिया स्टालिनवादी सर्वसत्तावादी तानाशाही का एक जीता जागता उदाहरण है, जोकि केन्द्रीकृत तथा एक दलीय व्यवस्था के रूप में कार्य करता है। किम जोंग उन उत्तर कोरिया के डेमोक्रेटिक पिपुल्स रिपब्लिक में एक साम्यवादी अधिनायकवादी शासन का प्रमुख हैं, जिसे वर्तमान के तानाशाहों में सबसे खतरनाक तानाशाह माना जाता है। वास्तव में किम को 'स्टालिनवादी' के रूप में चित्रित किया जाता है। इसने 1994 में अपने पिता किम II सुंग से तानाशाह के रूप रूपमें सत्ता अपने हाथ में ले लिया। तब से आज तक उसने अपने ही लोगों के नागरिक अधिकारों का उल्लंघन किया है, और सात साथ ही इल्जाम उत्तर कोरिया के परमाणु हथियार रखने के नाम पर, अपने ही क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय संबंधों को अस्थिर कर दिया है।

8.6 सर्वसत्तावाद की प्रमुख विषेशताएँ

अरडेण्ट(1994) लिखती है कि ''सर्वसत्तावाद स्वतंत्रता का सबसे अतिवादी हनन व खण्डन हैं। फ्रेडरिल तथा ब्रेजिन्सकी ने छः व्यवस्थित विशेषताओं को सिद्ध करने का प्रयास किया है। एक शासकीय विचारधारा, एक नेता के अधीन एकल दल व्यवस्था, गुप्त पुलिस तंत्र, मीडिया पर नियंत्रण, सभी हथियारों पर एकाधिकार तथा ऐसी अर्थव्यवस्था को जो चाहे राज्य नियंत्रित ना हो परन्तु राज्य निर्देशित हो।

इमीलियों जेनटाइल (2006) ने सर्वसत्तावाद को इस प्रकार परिभाषित किया है:

राजनीतिक प्रभुत्व में क्रांतिकारी आंदोलन स्थापित करने का प्रयोग जो क्रांतिकारी आंदोलनों के द्वारा सैन्य अनुशासन से लैश और पुलिस गुप्तचरों सत्ता पर एकाधिकार के उद्देश्य के माध्यम से स्थापित किया जाना अर्थात् सब कुछ आत्मसात कर लेने वाली राजनीति के द्वारा किया गया अवधारणा प्रयोग है, ताकि इनका वर्चस्व या एकाधिकार

स्थापित हो जाए। सत्ता को किसी भी हाल में कानूनी या अवैध तरीके से स्थापित करना पूर्व की सत्ता में परिवर्तन या उसे बर्बाद कर देना ताकि अपनी एकदलीय व्यवस्था को स्थापित किया जा सके, जिसका मुख्य मकसद वहाँ के समाज को जीतना, यानि अधीनता स्वीकार करवाना, एकीकरण तथा समरूपीकरण के आधार पर षासन करना हमेशा सर्वोपरि हो। राजनीति का स्वरूप कैसा भी हो, व्यक्तिगत या सामूहिक, इसे एक समूह के रूप में कल्पना या मतों के अनुसार इसका संस्थागत तरीकें से राजनीतिक धर्म के पहलुओं को उजागर करना। व्यक्ति या समूह के विचारों को नये साँचे में ढालकर..... एक नये समर्पित और कट्टर मनुष्य की रचना करना..... जो इस अधिनायकवादी साम्राज्यवादी दल के प्रति समर्पित हो का हमेषा से मुख्य विषय रहा हैं''।

सर्वसत्तावाद की मुख्य विषेशताएँ निम्नलिखित हैः

1. क्रियाशील नेताः अधिनायकवादी सरकार का प्रभुत्व वैऐसा नेता करता है, जो अपनी नीतियों के लिए समर्थन जुटाए तथा जिसमें अपनी गतिविधियों को उचित सही सिद्ध करने की कला आती हो।

   अधिनायकवादी नेता अपनी अधिकतर बातों को सुरक्षा एवं भविष्य के दिशा निर्देशों में बांधने का प्रयास करते है। ऐसे नेता मुख्यतः लोगों को जोड़ता है, सरकार का प्रतीक होता है तथा अपनी इच्छाओं के बल पर लोकप्रिय समर्थनों में इजाफा बढ़ोत्तरी करता है। अतीत में इतिहास में ऐसे कई नेता हुए जिन्होंने पुलिस गुप्तचरों के माध्यम से अपने विरोधियों को कुचल दिया तथा लोगों के भीतर एक आंतक का माहौल भी पैदा कर दिया। कोई भी राज्य का शत्रु या देशद्रोही उनकी शक्की निगाहों या दोषारोपण से बच नहीं पाया।

   अडोर्नो ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यूरोप में फासीवाद तथा यहूदी विरोधी उदय में तर्कव्हीन। अतार्किक अधिनायकवादी भूमिका का पता लगाया। अडार्नो एट अल (1950), ने अपनी कृति *'ऑथोटिरियन पर्सॅनालिटी '* में संभावित फासीवादी व्यक्ति तथा अधिनायकवादी व्यक्तित्व के भावनात्मक लक्षण का विष्लेशण किया है।

   (क) रूढ़िवादी लक्षणः मध्यम वर्गीय मतों के प्रति कठोर निष्ठा तथा दूसरों के प्रति गैर लचीला व्यवहार रखना।

   (ख) अधिनायकवादी अधीनता सत्ताधारी लोगों के प्रति अज्ञाकारी तथा अतार्किक नीति रखने वाला।

   (ग) अधिनायकवादी आक्रामकताः नियमों का उल्लंघन करने वालों को सक्रिय खोज कर देखने तथा उन्हें सजा देने की प्रवृत्ति की इच्छा रखना।

   (घ) अतिग्रहण विरोधीः जो कल्पना शीलता, रचनात्मकता या भावुकतावाद को नहीं मानता है।

   (ङ) रूढ़िवादी तथा अंधविश्वासीः भाग्य जैसे तत्वों में विश्वास तथा अपने कट्टर रूढ़िवादी ताकतों द्वारा विश्व का नीति निर्धारण करने वाला।

   (च) शक्ति और दृढ़ताः शक्ति का अतिशयोक्तिपूर्ण दावा करने के साथ ही विभाजन, प्रभुत्व / अधीनता, शक्तिशाली / कमजोर, नेता। अनुसारकर्त्ता का दावा करने वाला।

(छ) विध्वंसकता तथा निराशावादः शत्रुता का सामान्यीकरण शत्रुओं तथा मानवीय स्थिति दशाओं से नफरत करने वाला

(ज) प्रक्षेपणताः स्वयं के अनचाहे पहलुओं को दूसरे पर प्रक्षेपण करना

(झ) यौन क्रियाः दूसरे की यौन गतिविधियों के साथ एक अतिश्योक्तिपूर्ण सरोकार रखना।

अडांर्नो का कहना है फासीवादी तथा अधिनायकवादी शासन व्यक्तियों की खास पहचान उनका बाहरी समूहों के प्रति कलंकित तथा नष्ट करने वाले आत्मघाती विचार, रक्त पिपासु– आकांक्षा, नस्लीय पूर्वावाह और प्रजातीय घृणा उनके शासन के सहजप्रवृत्ति का बड़े अच्छें से प्रदर्षन करता है। था। साथ ही उनके पास सामाजिक सत्ता के लिए समर्पणकारी नीति भी मौजूद है।

वहीं मारक्यूस के लिए, 'दमन की प्रक्रिया' (Repressive desublimation) यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया थी जो कहीं न कहीं फासीवादी और अधिनायकवादी समाजों के उद्‌भव उत्तर के बाद की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति से जोड़ती थी अर्थात् के जुड़ाव की प्रकृति या इनके विकास ने इस मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया की भूमिका को दिखाने का प्रयास कर रही थीं।

वन–डाइमेंनशलन मैन में मारक्यूस पूँजीवाद के भीतर समाज की अवस्था का वर्णन करते हैं। वन डामेनशनल मैन में एक 'शासित व्यक्ति' का वर्णन मीडिया के द्वारा दिखाने का प्रयास किया जाता है जिसमें वह व्यक्ति तकनीकी पूँजीवाद तथा उपभोक्ता वादी विचार के साथ एक नये अधिनायकवादी स्वरूप के अधीन मालूम पड़ता है। और यह व्यक्ति को सीधे–सीधे तार्किक सोच व विचार के पतन तथा अधिनायकवादी प्रभुत्व की तरफ अग्रसर करता है।

20वीं सदी में अधिनायकवादी तानाशाह/नेता

नेता	देश	काल
एडोल्फ हिटलर	जर्मनी	1933–1954
बेनिटो मुसोलिनी	इटली	1925–1943
जोसेफ स्टालिन	सोवियत संघ	1929–1953
किम इल सुंग	उत्तर कोरिया	1948–1994
सद्दाम हुसैन	इराक	1979–2003

2. **तानाशाही और एक दलीय शासनः** तानाशाह और उसका दल दोनों ही निरंकुश सत्ता और सरकार पर प्रभुत्व का प्रयोग करते है।

3. **विचारधाराः** विचारधारा सर्वसत्तावाद का एक अनिवार्य तत्व है। लुईस अलथ्रजर (1970) ने माना है कि विचारधारा किस प्रकार व्यक्ति के रोजमर्रा से सामाजिक विन्यास को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम तथा साथ ही साथ विभिन्न प्रकार के राजनीतिक विचारों पर चर्चा करने का एक खास जरिया भी मालूम पड़ता है। वही अधिनायकवादी शासन में, राज्य के लक्ष्य सत्ता में मौजूद पार्टी की विचारधारा से तय होती है, यह केवल राज्य के लक्ष्यों को गौरवान्वित तथा सरकार के कार्यों को ही उचित ठहराता हैं।

4. **व्यक्तियों पर राज्य का नियंत्रण:** ऐसा राज्य नागरिकों की आधारभूत स्वतंत्रता देने से इनकार करती है और व्यक्तिगत बलिदान एवं निष्ठा की आशा करती है।

5. **समाज पर राज्य का नियंत्रण:** इस तरह समाज के प्रत्येक संगठन एवं संस्थान पर यहाँ तक कि व्यवसाय, श्रम, आवास प्रबंध, शिक्षा, धर्म, कला, युवा समूह, और व्यक्तिगत जीवन पर भी राज्य का नियंत्रण होता है।

6. **आधुनिक तकनीकि:** आज के समय में तकनीक सभी सरकारों का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। लेकिन 20 वीं सदीं में, इसके व्यापक प्रसार ने व्यक्तिगत जीवन के हर पहलू और पक्ष की जानकारी देने में अहम भूमिका निभाई है। एक अधिनायकवादी सरकार इसका इस्तेमाल अपने प्रचार– प्रसार/मत प्रसार के लिए करती है। इसके साथ ही अधिनायकवादी सरकार अपने क्षेत्रों पर शासन करने के लिए उन्नत किस्म के सैन्य साजों सामान पर भी आधिपत्य रखते हैं।

   डायलेक्टिक ऑफ इनलाइटेनमेण्ट में, ऑडॉर्नो तथा होरखेमर (2002) का यह मानना है कि प्रबोधन ने पश्चिमी सभ्यता तथा मानव जाति को पूरी तरह असफल कर दिया इस कारण प्रबोधन जागृति का शासन नहीं बल्कि सर्वसत्तावाद का शासन था।

   (क) जर्मनी में नाजिवाद का उदय तथा हिटलर द्वारा यहूदियों का नरसंहार

   (ख) यू.एस. में सांस्कृतिक उद्योग का उदय वास्तव में व्यावसायिक मत–आरोपण तथा फासीदवादी विचारधारा के प्रभुत्व की प्रक्रिया थी। संस्कृति विचारधारा के प्रभुत्व का माध्यम बन गई जिसके द्वारा पूँजीवादी व्यवस्था के प्रभुत्व को बनाए रखा गया।

   (ग) आधुनिक तकनीकी युद्ध का अंत

7. **विधि प्रणाली:** हिंसा का इस्तेमान सर्वसत्तावादी सरकार का प्रमुख लक्षण है। इनके विचारधारा तथा आज्ञा को पुलिस आतंक, समझाने, सेन्सरसीप तथा उत्पीड़न के द्वारा लागू किया जाता है।

   (क) **पुलिस आतंक:** अधिनायकवादी राज्य के तानाशाह जबरदस्ती अनुसरण तथा विपक्ष को कुचलने के लिए आतंक और हिंसा का प्रयोग करते हैं। सरकारी नीतियो को लागू करने में पुलिस की अहम भूमिका होती है। ये ऐसा नागरिकों की जासूसी और उन्हें धमकाकर करते हैं। कभी–कभी अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निर्मम ताकत और यहाँ तक कि हत्या भी करते हैं।

   (ख) **प्रत्यक्षवाद (indoctrination):** अधिनायकवादी राज्य प्रत्यक्षवाद तथा सरकार के नीति निर्देषों के अनुसार व्यक्तियों/नागरिकों को इन सांचो में ढालने में विश्वास रखता है। नेता और उनकी नीतियों को गौरवान्वित करने तथा मकसद शिक्षा पर नियंत्रण स्थापित करना है। प्रत्यक्षवाद का आरम्भ बच्चों के समूह से शुरू होकर, जवान समूहों को प्रोत्साहित कर, विधालयों के जरियें इसे लागू कर दिया जाता है।

   (ग) **प्रचार तथा प्रतिबन्ध (सेन्सरशिप)**– अधिनायवादी राज्य मत प्रचार, पूर्व सूचना या अधूरी जानकारी देकर नागरिकों को निश्चित आस्था तथा प्रक्रिया के द्वारा प्रभावित करने की कोशिश करता है। पत्रकारिता पर अपना पूर्ण नियंत्रण रखता है ताकि वे इसका पूर्ण रूप से प्रचार करें। बिना सरकार के

मंजूरी के किसी प्रकार की फिल्म, कला, प्रकाषन या संगीत का आयोजन नहीं होता है। नागरिक गलत जानकारियों से चारों तरफ से घिरे होते है और वहीं उन्हें सही लगता या दिखाया जाता है। व्यक्ति जो इन सभी विचारों से असहमति रखते है उन्हें या तो कैद में डाल दिया जाता है या मार दिया जाता है।

(घ) **धार्मिक प्रजातिय उत्पीड़न**– अधिनायकवादी नेता राज्य के लिए स्वयं शत्रु का निर्माण करते है ताकि उन्हें नागरिकों की सहानुभूति मिल सके और वे इन राज्यों को हर कार्य के लिए दोषी ठहरा सके। सामान्यतः ये दुश्मन किसी खास धर्म या प्रजाति के होते हैं। प्रायः ऐसे समूहों को चिहिन्त कर आतंक और हिंसा का शिकार बनाया जाता है। वे किसी खास कानून और जगह पर रहने के लिए मजबूर किए जाते हैं।

बोध प्रश्न

1. सर्वसत्तावाद क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. किस प्रकार सर्वसत्तावाद सभ्यता उन्मूलन का माध्यम है ? विचार करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. स्टालिन के अधिनायकवादी राज्य की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

4. जर्मनी में नाजीवाद के उदय पर विवेचना करे।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.7 सारांश

इस प्रकार सर्वसत्तावाद लोकतंत्र के बिल्कुल विपरीत है। लोकतांत्रिक शासन में विभिन्न प्रकार के सामाजिक तथा राजनीतिक, प्रतिष्ठा, प्रक्रिया, प्रेरणाएँ और आदर्श होते हैं। वही सर्वसत्तावाद एकदल या एकाधिकार पर आधारित शासन हैं, ऐसा इसलिए नहीं क्योंकि वह एकदलीय व्यवस्था स्वीकार या सत्ता नियंत्रण पर जोर देता है बल्कि यह एकाधिकार पर आधारित व्यवस्था है। यह दल राज्यतंत्र को संचालित, नियंत्रित तथा प्रसारित करती है। स्टालिन के साथ ही राज्य तथा दल का दर्जा एक हो जाता है। क्योंकि इसनें तमाम आंतरिक राजनीतिक बहस, दक्षिण और वांमपथी दर्रे को समाप्त करके सभी और एकाधिकार या एक दलीय व्यवस्था का प्रचार कर दिया। अधिनायकवादी दल के रूप में यह सबकुछ जानती तथा हर जगह व्याप्त थी और जिसका संपूर्ण राज्य पर नियंत्रण स्थापित हो गया। जहाँ पार्टी राज्य को नियंत्रित करती, पार्टी की पुलिस पार्टी को नियंत्रित करती तथा पार्टी राज्य को नियंत्रित करती है। इस प्रकार अधिनायवादी शासन में एक दूसरे को नियंत्रित करने की चक्रीय श्रृंखला होती है। सर्वसत्तावाद की खास बात यह है कि सूचना और सत्य पर एकाधिकार स्थापित करने के लिए इनका संचार पर पूर्ण रूप से नियंत्रण होता है।

यह व्यवस्था ना केवल सूचना के अधिकार को दबाने के लिए सेन्सर का इस्तेमाल करते हैं, जैसा कि दूसरे तानाशाह भी करते हैं। बल्कि सुखद, पारदर्शी, उत्साही एकमत तथा वास्तविक समाजवाद, की छवि प्रस्तुत करने वाली व्यवस्था भी है। यदि किसी प्रकार का कोई समस्या उत्पन्न होती है तो ये उसका सारा दोष पूंजीवाद के एजेण्ट, देशद्रोही, गद्दार, जासूस तथा शत्रु के सिर पर डाल देते हैं। मीडिया पर सर्वसत्तावादी नियंत्रण शब्दकोषों, शब्दों तथा वस्तुओं के अर्थ को भी नियंत्रित करता है। मीडिया ही पाठकों और दर्शकों के औपचारिक भाषाओं को तय करती हैं कि उन्हें कब और क्या नहीं कहना है।

सर्वसत्तावाद एक ऐसी व्यवस्था है जो कि आत्मनिर्भर तथा प्रश्नविहीन व्यवस्था बनना चाहती है। इसे एक ऐसे 'ग्रालग' की आवश्यकता है जो इसके तमाम विरोधियों तथा उनके उदय की संभावनाओं को ही समाप्त कर दे। यह व्यवस्था आत्मनिर्भर तो होती है, परन्तु संपूर्ण रूप से यह कमी हो नहीं पाती है, ना हो सकती है। इस कारण एडगर मोसि (1991) कहते हैं कि यह एक ऐसी व्यवस्था है जो अपनी प्रचुर शक्ति की प्रेरणा अपने प्रबल कमजोरियों में पाती है।

अति नौकरशाही और अति अराजकता को जन्म देने या प्रसार करने के कारण यह व्यवस्था कमजोरियों की पुँज होती है; क्योंकि यह विविध संभावना वाली राष्ट्रीयता के

अंदर एक कृत्रिम/बनावटी विवशता या बाधा को जीवित रखती है; श्रमिक वर्ग के नाम पर श्रमिक वर्गों को शिकायत, हड़ताल या अभिव्यक्ति का मौका नहीं देती। यहाँ तक कि यह राजनीतिक बहुलवाद तथा स्वतंत्र चुनाव कराने में भी अपने आपको सक्षम महसूस नहीं करता है।

संदर्भ

- एडॉर्नी, टी. और होरखेमर, मैक्स. 2002. डायलेक्टिक ऑफ इनलाइटेनमेंटः फिलॉसोफिकल फ्रैगमेंट. स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- एडॉर्नो. टी. एट. एल. 1950. द ऑथोएिटेसिन पर्सानालिटी. हार्पर एण्ड रॉ.
- अरडेण्ट, हन्ना. 1951. द ऑरिजीन ऑफ टोटालिटेरियनिज्म. पेंगविन बुक्स
- फ्रेडरिक, सी जे. एण्ड ब्रेजनिस्की, जेड. 1972. टोटैलिटेरियन डिक्टेटरशिप एण्ड ओटोक्रेसी. प्रेगर पब्लिशर, न्यूयॉर्क
- जेन्टिल, एमिलियो. 2006 पॉलिटिक्स एज रिलीजन. प्रिंसिटन यूनिवर्सिटी प्रेस. प्रिंसिटन
- हॉलबरस्ट्राम, माइकल. 1999. टोटेलिटेरियनिज्म एण्ड द मॉर्डन मॉनसेप्सन ऑफ पॉलिटिक्स. येल यूनिवर्सिटी प्रेस. न्यू हेवेन
- हॉब्सबॉम, इरीक. 1997. ''बारबेरिज्मः ए यूजर्स गाइड'', इन ऑन हिस्ट्री. द न्यू प्रेस, न्यूयॉर्क.
- लिटिल, मैकेडगल. 2005, बर्ल्ड हिस्ट्रीः पैटनेस ऑफ इनटेरैक्सन रैण्ड मैकनैली, यूएस.
- मारक्यूज, वन–डाइमेन्सनल मैन
- मोरिन, इडगर. 1991 ''द एण्टी. टोटेलिटेसिन रेवोल्यूसन'', इन थेसिवन–सेज।

8.8 शब्दावली

यहूदी विरोधी : यहूदियों के प्रति पूर्वाग्रह

सर्वसत्तावाद : समाज का ऐसा रूप जिसमें जीवन के हर स्वरूप पर राज्य का नियंत्रण एवं सत्ता को नियमित करने के लिए राज्य के इस नियंत्रण को समाज के कल्याण के लिए मुख्य माना जाता है।

8.9 उपयोगी पुस्तकें

- आडॉर्नो, टी, एट. अल. 1950. द ऑथोरिटेरियन पर्सनलिटी. हार्पर एण्ड रॉ.
- फ्रेडरिक. सी.जे. एण्ड ब्रेजजिन्सकी, जेड. 1972. टौटलिटैरियन डिक्टेटशिप एण्ड ऑटोक्रेसी. प्रेगर पब्लिसर, न्यूयॉर्क
- हॉब्सबॉम, इरीक. 1997. ''बारबेरिज्मः ए यूजर्स गाइड, इन ऑन हिस्ट्री. द न्यू प्रेस न्यूयॉर्क।

8.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. अधिनायकवादी सरकार का स्वरूप ऐसा है जिसमें संपूर्ण केंद्र तथा नागरिकों के सार्वजनिक और निजी जीवन पर राज्य का संपूर्ण नियंत्रण होता है। इसके विपरीत, लोकतांत्रिक सरकार जनता की सरकार होती है। अधिनायकवादी सरकार के प्रचार–प्रसार में मीडिया की प्रमुख भूमिका होती है, साथ ही एकदलीय व्यवस्था वाली यह सरकार नागरिकों के संपूर्ण निजी जीवन पर पूर्ण नियंत्रण रखती हैं। दूसरे तानाशाहों जैसे स्टालिन तथा हिटलर ने भी मुसोलिनी का ही अनुसरण किया।

2. सभ्यता आधुनिक और समकालीन समय में मुख्यतः नियमों और नैतिक व्यवहारों तथा तार्किकता का समागम है। प्रथम विश्व युद्ध के साथ ही सभ्यता का पतन शुरू हो गया, और इसकी वृद्धि द्वितीय विश्व युद्ध में नाजीवाद और फासीवाद के उरय के साथ निरन्तर बनी रही। अधिनायकवादी युग की शुरूआत फासीवादी और नाजीवादी जैसे वैकल्पिक अभिव्यक्तियों के साथ शुरू हो गई थी। इस युद्ध में अधिनायकवादी के हाथों द्वारा सत्य और विवेक की हत्याएँ कर दी गई। और इस तरह सभ्यता के विनाश के साथ ही हमने एक नई दुनिया बर्बरता की दुनिया में प्रवेश कर कए। दूसरे शब्दों में, अधिनायकवादी शासन सभ्यता के पतन में प्रमुख बन गया।

3. कार्ल मार्क्स का मानना है कि साम्यवाद के तहत राज्य अपने आप ही विलुप्त हो जाएंगे। लेकिन स्टालिन के काल में ठीक इसका उल्टा हुआ। इसने सोवियत संघ को एक ताकतवर और जटिल नौकरशाही द्वारा नियंत्रित होने वाला अधिनायकवादी राज्य बना दिया। जिसके अंतर्गत सारे आर्थिक फैसले सरकारी नौकरशाहों के द्वारा लिए गए। राज्य ने खेती के उत्पादों की कीमत तथा उत्पादों तक पहुँच को नियंत्रित कर दिया। पुलिस गुप्तचरों ने लाखों देशद्रोहियों को बंदी बनाया तथा उन्हें मार डाला। स्टालिन ने अपने तमाम विद्रोहियों के दमन के लिए 1934 में 'द ग्रेट पर्ज' नामक आतंकी प्रचार की शुरूआत की। मार्क्स तथा लेनिन की पुस्तकें 'पवित्र ग्रंथ' बन गई तथा स्टालिन की प्रतिमाओं ने धार्मिक प्रतिमानों का स्थान ले लिया।

4. एक सेवानिवृत्त व्यक्ति एडोल्फ हिटलर साल 1919 में दक्षिण पंथी उग्रवादी छोटे से समूह से जुड़ गया। एक साल के भीतर ही वह इस पार्टी राष्ट्रीय समाजवादी जर्मन वरकर्स पार्टी या नाजी पार्टी का निर्विवाद नेता चुन लिया गया। 1923 में उसने म्यूनिख को जीतने का एक असफल प्रयास किया जिसके लिए उस जेल में डाल दिया गया। सजा काटते हुए/सजा के दौरान उसने 'मेन केम्फ' (मेरा संघर्ष) नामक पुस्तक लिखी। इसमें उसने अपने अति राष्ट्रवाद नस्लवाद और यहूदी विरोधी भावना को प्रतिबिंबित किया। जेल से बाहर आने के बाद उसने सेवानिवृत्त सैनिकों, निम्न मध्यवर्गीय तथा छोटे शहरों एवं तमाम जर्मनवासियों से एक प्राकर की गुहार लगाई। उसने मुआवजे का अंत तथा नौकरियाँ देने का वादा किया। रूढ़िवादियों के मदद से 1933 में हिटलर चांसलर नियुक्त हुआ। जल्द ही हिटलर जर्मनी का तानाशाह बन बैठा तथा उसके बाद उसने तमाम नागरिक अधिकारों, समाजवादियों, साम्यवादियों तथा राजनीतिक पार्टियों का बरर्खास्त कर दिया।

जर्मनी एकदलीय राज्य बन गया। इस प्रकार हिटलर ने दक्ष परंतु क्रूर अधिनायक वादी शासन की नींव रखी।

इकाई 9 लोकतांत्रिक*

इकाई की संरचना

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली

9.2.1 लोकतंत्र की अवधारणा का उत्पत्ति और अर्थ

9.3 लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली के तत्व

9.3.1 विचारधारा

9.3.2 संरचना और अल्पतंत्र

9.4 लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली का प्रकार्य

9.4.1 राजनैतिक समाजीकरण और राजनैतिक प्रणाली

9.4.2 हित अभिव्यक्ति

9.4.2.1 संस्थागत हित समूह

9.4.2.2 संगठनात्मक हित समूह

9.4.2.3 गैर–संगठनात्मक हित समूह

9.4.2.4 अनियोजित हित समूह

9.4.3 हित समुच्चयन

9.4.4 राजनैतिक सम्प्रेषण

9.4.5 सरकारी प्रकार्य

9.5 राजनैतिक प्रक्रियाएँ

9.6 वैधता का आधार

9.6.1 पारंपरिक और करिश्माई प्राधिकरण

9.6.2 कानूनी–तर्कसंगत प्राधिकरण

9.6.3 आधुनिक राजनैतिक व्यवस्था की वैधता

9.7 सारांश

9.8 शब्दावली

9.9 उपयोगी पुस्तकें

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

* प्रो. रवीन्द्र कुमार के द्वारा ईएसओ 11, इकाई 18 से अनुकूलित की गई है।

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित अवधारणाओं को समझ सकेगें:

- लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली की व्याख्या कर सकेगें,
- लोकतंत्र की उत्पत्ति और अर्थ का वर्णन कर सकेगें,
- लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली के घटकों पर चर्चा कर सकेगें।

9.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाई में हम लोगों ने सर्वसत्तावादी राजनैतिक प्रणाली के बारे में अध्ययन किया है। इस इकाई में हम लोग लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली के उत्पत्ति और लोकतंत्र की अवधारणा के अर्थ पर विचार–विमर्श करेंगे। एक लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली में कुछ तत्व समाहित होते हैं। एक लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली के इन तत्वों की व्याख्या करते हुए यह इकाई इसके विचारधारा, संरचना और प्रकार्य के अलावा राजनैतिक प्रक्रियाओं और एक राजनैतिक प्रणाली की वैधता के आधार पर प्रकाश डालती है।

9.2 लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली

इस खंड में हम लोग लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली के साथ–साथ औद्योगिक सामाजिक प्रणाली के विकास, स्वतंत्रता, समानता और व्यक्तिवाद की विचारधाराओं के विकास का अध्ययन करेगें। ये विचारधाराएं लोकतांत्रिक राजनैतिक व्यवस्था के विकास के लिए जिम्मेदार हैं।

औद्योगिक सामाजिक व्यवस्था और पूंजीवाद के विकास के कारण मध्ययुगीन राजतंत्र आधुनिक लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली में बदल गया। इस प्रणाली ने न्यूनतम अधिक स्वतंत्रता और राज्य द्वारा न्यूनतम हस्तक्षेप के सिद्धांत पर जोर दिया। औद्योगिक–पूंजीवादी राज्यों ने उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में दुनिया के अधिकतर आदिम और कृषि आध ाारित समाजों पर अधिकार कर लिया और उन्हें अपने बाजारों में बदल दिया। इन राज्यों को पूंजीवादी साम्राज्यवादी राज्यों के रूप में जाना जाता था। पूंजीवादी–साम्राज्यवादी राज्य की आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण ही दो विश्व युद्ध भी हुए। प्रथम विश्व युद्ध के पीछे पश्चिम से संबंधित नेताओं का मानना था कि वे दुनिया को लोकतंत्र को सुरक्षित बनाने लिए यह युद्ध लड़ा गया। सर्वहारा लोकतंत्र के नाम पर और लोगों के लोकतंत्र, और अफ्रीकी और एशियाई लोकतंत्र की कई किस्मों के नाम पर पश्चिमी उदार लोकतंत्र के खिलाफ संकल्प लिए गए। सोवियत संघ अब अविभाज्य नहीं रहा। चीन भी पूरी तरह से पश्चिमी देशों के समूह से बाहर चला गया है। और इस सबसे ऊपर, अफ्रीका और दक्षिण–पूर्वी एशिया के अधिकांश अविकसित राष्ट्रों ने स्वतंत्रता प्राप्त की है, इन परिस्थितियों में वे राज्य एकल राजनैतिक प्रणाली पर चलने लगे हैं। लेकिन ये सभी देश खुद को लोकतांत्रिक मानते हैं। यह लोकतंत्र के विभिन्न आयामों को इंगित करता है। अब हमलोग लोकतंत्र की उत्पत्ति और अर्थ पर विचार–विमर्श करेगें।

9.2.1 लोकतंत्र की अवधारणा की उत्पत्ति और अर्थ

एक राजनीतिक प्रणाली में या तो सीधे या राजनैतिक प्रतिनिधियों के चुनाव के माध्यम से राजनैतिक निर्णय लेने में नागरिकों की भागीदारी के लिए प्रदान करने वाली मंच को

लोकतंत्र के रूप में जाना जाता है। लोकतंत्र की अवधारणा ग्रीक डेमोक्रैटिया से आती है, जिसमें एक साथ डेमो (लोग) और क्रेटोस (नियम या पावर) आते हैं। यह स्पष्ट है कि समाज सम्राट, सम्राटों या अशिक्षित तानाशाहों के बजाय स्वयं के लोगों के द्वारा शासित होना चाहता है। हालाँकि, यद्यपि प्राचीन ग्रीस में प्रत्यक्ष लोकतांत्रिक भागीदारी का प्रचलन था, लेकिन फिर भी शासन के महत्वपूर्ण निर्णय नागरिकों के एक छोटे समूह द्वारा लिए जाते थे, और बाकी लोगों को विशेष अधिकार नहीं दिया गया था। लोकतांत्रिक शासन की अवधारणा अलग–अलग समय पर विभिन्न समाजों में अलग–अलग प्रकार की रहे हैं। समय और स्थान के अनुसार लोगों द्वारा शासन का अर्थ भी बदला है। विभिन्न समयों में नागरिक की अवधारणा में वयस्क पुरुषों तक ही सीमित रखा गया है, जो केवल संपत्ति के मालिक हैं, और केवल एक निश्चित आयु के बाद के पुरुष के साथ–साथ महिला वयस्कों के लिए भी। प्रतिनिधि लोकतंत्र, जिसमें लोग अपनी ओर से कार्य करने के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं, यह लोगों द्वारा 'शासन करने' की सामान्य विधि बन गई है। 1990 के दशक में पूर्वी यूरोपीय साम्यवाद की समाप्ति के साथ ही उदार लोकतंत्र के स्वरूप को दुनिया भर में एक प्रमुख नमूने (Model) के रूप में देखा गया है।

लोकतंत्र को राजनैतिक प्रणाली के रूप में ऐसा जाना जाता है कि यह राजनैतिक समानता सुनिश्चित करने, स्वतंत्रता और अधिकार की रक्षा करने में सक्षम होता है। यह आम हित का बचाव करता है, नागरिकों की जरूरतों को पूरा करता है, नैतिक आत्म–विकास को बढ़ावा देता है, और प्रभावी निर्णय लेने में सक्षम बनाता है, जिसमें सभी के हितों को ध्यान में रखता है (हेल 2006)।

प्रतिनिधि लोकतंत्र एक ऐसी राजनैतिक प्रणाली का स्वरूप है जिसमें किसी समुदाय को प्रभावित करने वाले निर्णय सीधे उसके सदस्य न लेकर बल्कि उनके द्वारा चुने हुए निर्वाचित प्रतिनिधि लेते हैं। राष्ट्रीय सरकारों में, प्रतिनिधि लोकतान्त्रिक चुनावों के रूप में संसदों या समान राष्ट्रीय निकायों का गठन होता है। जिन देशों में मतदाता दो या दो से अधिक दलों के बीच चयन कर सकते हैं और जिनमें वयस्क आबादी के पास मतदान का अधिकार होता है, उन्हें आमतौर पर उदार लोकतंत्र कहा जाता है और इसमें ब्रिटेन, यूएसए, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं।

1980 के दशक की शुरुआत में लैटिन अमेरिका के कई देशों, जैसे कि चिली, बोलीविया और अर्जेंटीना आदि राष्ट्र सत्तावादी सैन्य शासन से रूपांतरित होकर लोकतान्त्रिक प्रणाली में आ चुके हैं। इसी तरह, 1989 में कम्युनिस्ट ब्लॉक के पतन के बाद, कई पूर्वी यूरोपीय राज्यों उदाहरण के लिए रूस, पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया अब लोकतांत्रिक राष्ट्र हो गए हैं। और, अफ्रीका में, पहले के अलोकतांत्रिक राष्ट्रों में से कई राष्ट जैसे–बेनिन, घाना, मोजाम्बिक और दक्षिण अफ्रीका अब लोकतांत्रिक आदर्शों को अपनाने चुके हैं। लोकतंत्र अब मुख्य रूप से पश्चिमी देशों में केंद्रित नहीं है, लेकिन अब दुनिया के कई क्षेत्रों में वांछित सरकार के रूप के रूप में, कम से कम सैद्धांतिक रूप में लोकतंत्र का समर्थन हो रहा है। अब हम लोकतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली के तत्वों पर चर्चा करेगें।

9.3 राजनैतिक प्रणाली के तत्व

एक लोकतांत्रिक समाज की राजनैतिक प्रणाली को (1) विचारधारा, (2) संरचना, (3) प्रकार्य, (4) प्रक्रिया और (5) आधार की वैधता के संदर्भ में सर्वोत्तम रूप से वर्णित किया जा सकता है।

9.3.1 विचारधारा

विचारधारा को मान्यताओं और प्रतीकों की एक एकीकृत प्रणाली के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो उसके अनुसरणकर्ताओं को तर्कसंगत और विवेकपूर्ण अर्थ से अलग आकर्षित करता हो। इसमें अनुसरणकर्ताओं की भावनाओं में बहा ले जाने की शक्ति होती है। इसे अनुसरणकर्ताओं द्वारा विश्वास का एक सामग्री के रूप में स्वीकार किया जाता है। सामान्यतया एक राजनैतिक प्रणाली व्यापक है और उस प्रणाली के भीतर विशेषकर राजनैतिक दलों की अपनी विचारधाराएं हो सकती हैं, जो सदस्यों को राष्ट्र या पार्टियों के लक्ष्यों और साधनों से अवगत कराएगी। इसका अर्थ यह है कि अनुसरणकर्ता न केवल बिना किसी सवाल के लक्ष्यों को स्वीकार करते हैं, बल्कि तमाम तरह के व्यवधान या जोखिमों के बाबजूद उन साधनों को स्वीकार करने लिए भी प्रतिबद्ध भी होते हैं। एक विचारधारा और इसके लक्ष्यों और साधनों के आंतरिकीकरण की मात्रा व्यक्ति के राजनैतिक समाजीकरण और अपने सदस्यों को अनुशासित करने की सीमा पार्टी की क्षमता पर निर्भर हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी विचारधारा को समझने के लिए एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक मात्रा अलग–अलग होती है। पार्टी के सदस्यों के राजनैतिक प्रदर्शन पर ही यह निर्भर करता है कि किस सीमा तक इसे समाहित किया जा सकें और पार्टी इसे किस हद तक महत्वपूर्ण मानती है।

विचारधारा राजनैतिक, आर्थिक या धार्मिक तत्वों पर आधारित हो सकती है। कभी–कभी, प्रजातीय और सांस्कृतिक तत्व भी विचारधारा के लिए आवश्यक आधार प्रदान कर सकते हैं। लोकतंत्र एक राजनैतिक विचारधारा है, जबकि साम्यवाद एक आर्थिक विचारधारा है और धर्मतंत्र एक धार्मिक विचारधारा है। हालांकि, उनमें से किसी एक के बारे में यह कहा नहीं जा सकता कि कोई एक क्षेत्र मात्र तक सीमित है। चूंकि राजनीति, अर्थशास्त्र और धर्म कई क्षेत्रों में एक–दूसरे पर अतिव्याप्त (overlap) होते हैं, ऐसा विशेष रूप से विकासशील समाजों में ही होता है जहाँ समाजिक संबंधों में बहुत ज्यादा विस्तार होता है और इसीलिए वहां धार्मिक और आर्थिक विचारधाराओं का प्रभाव भी राजनैतिक विचारधारा पर पड़ता है। लोकतंत्र जैसी विचारधारा सभी नागरिकों के कल्याण की विचारधारा (एक आर्थिक विचारधारा) के रूप में कल्याण के लिए समर्पित रहेगी। एक बहु–धार्मिक समाज में धर्मनिरपेक्षता की भी आशा रहेगी। साम्यवाद एक विचारधारा के रूप में सबसे अच्छा उदाहरण है जो राजनैतिक और अन्य क्षेत्रों तक फैला हुआ है। साम्यवाद धर्म के खिलाफ है और कम से कम प्रारंभिक अवस्था में, एक अधिनायकवादी सामाजिक संरचना के लिए समर्पित है। हालांकि, अपने शुद्धतम रूप में एक विचारधारा के रूप में साम्यवाद, जैसा कि कार्ल मार्क्स द्वारा कल्पना किया गया था, दुनिया में कहीं भी प्रचलन में नहीं पाया गया है।

आधुनिक राजनैतिक प्रक्रिया की एक विशिष्ट विशेषता गैर–राजनैतिक मुद्दों और घटकों का एक बड़े पैमाने पर राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश भी है। इस प्रकार, भारत सहित दुनिया के कई देशों में राजनैतिक दलों की विचारधारा में जातीय, धार्मिक और क्षेत्रीय विचारों का दवाब बढ़ना प्रारम्भ हो गया है। कई देशों में तो धार्मिक कट्टरवाद ने भी अपनी जगह बना ली है। राजनैतिक दलों में अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक और प्रवृत्ति का विस्तार हो रहा है जिसमें ज्यादातर मामलों में चरमपंथी तरीकों का पालन करना भी है। ये दुनिया के कई देशों में राजनैतिक प्रक्रिया में अधिक से अधिक पैटर्न बनते जा रहे हैं।

राजनैतिक विचारधारा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप में आतंकवाद के साथ–साथ कट्टरवाद का उदय हुआ है जिससे राज्य के सामाजिक–राजनैतिक आधार के विनाश के अलावा राजनैतिक आधुनिकीकरण के पैटर्न में अप्रत्याशित वृद्धि भी संभावित है। उदाहरण के लिए, भारत में पंजाब, कश्मीर, नागालैंड, मणिपुर और उत्तर बंगाल,

कर्नाटक के कई हिस्सों में धार्मिक कट्टरवाद और जातीयता के साथ–साथ भाषाई आंदोलनों का उभार हुआ जो अक्सर आतंकवाद से प्रेरित होते हैं, इस प्रकार के उदाहरण दिखाते हैं कि ये समस्या लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा है। प्रजातीय रूप से बहुलतावादी समाजों में प्रमुख जातीय समूहों से संबंधित राजनैतिक अभिजात वर्ग अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए जातीयता को एक सुविधाजनक विचारधारा के रूप में उभार रहे हैं।

9.3.2 संरचना और अल्पतंत्र

एक राजनैतिक प्रणाली का एक अन्य घटक इसकी संरचना है। किसी भी समाज की राजनैतिक संरचना कभी न कभी अपने समय की शासक दल या शासकों की विचारधारा से प्रभावित होती है। इतना ही नहीं बल्कि यह सामाजिक संरचना, मूल्यों और समाज के विकास के स्तर से भी प्रभावित होता है। वास्तव में संरचना और मूल्य एक दूसरे को सुदृढ़ करते हैं और विकास को भी प्रभावित करते हैं। पारंपरिक सामाजिक संरचना और अधिनायकवादी मूल्य एक साथ चलते हैं जबकि आधुनिक सामाजिक संरचना और लोकतांत्रिक मूल्य एक साथ चलते हैं। निश्चित रुप से कुछ समाजों में क्रम परिवर्तन भी संभव हैं लेकिन वे अपवाद ही हैं। कई मामलों में सामाजिक संरचना और मूल्यों ने विकास में बाधाओं को भी जन्म दिया है। कम से कम उन्होंने विकास के गति को धीमा तो कर ही दिया और कुछ देशों में आधुनिकीकरण के प्रयासों को भी धीमा कर दिया। राजनैतिक दृष्टिकोण से, उन्होंने समाजों की राजनैतिक संस्कृतियों और उनके राजनैतिक अभिजात्य वर्ग के स्वरूप को बदल दिया है। इस प्रकार समाजों की राजनैतिक प्रणाली को प्रभावित किया है। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि जब हम अल्पतंत्र की बात करते हैं तो कोई भी समय सीमा स्पष्ट नहीं होता है। अल्पतंत्र में एक छोटा शक्ति समूह अनिश्चित काल तक रह सकता है।

राजनैतिक संस्कृति और राजनैतिक अभिजात्य वर्ग के अभिविन्यास के आधार पर राजनैतिक संरचनाओं को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

i) पारंपरिक अल्पतंत्र

ii) अधिनायकवादी अल्पतंत्र

iii) अल्पतंत्र का आधुनिकीकरण

iv) संरक्षात्मक लोकतंत्र, और

v) राजनैतिक लोकतंत्र।

vi) पारंपरिक अल्पतंत्र

i) पारंपरिक अल्पतंत्र

यह आमतौर पर राजशाही और राजवंश के स्वरूप में होता है और किसी भी संविधान के बजाय प्रथाओं पर आधारित होता है। सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग और नौकरशाही की नियुक्ति नातेदारी या समाजिक स्थिति के आधार पर की जाती है। शासक का लक्ष्य प्रणाली की स्थिरता और रखरखाव करने का होता है। अपने हित में यह आधुनिकीकरण की योजनाएं शुरू कर सकता है, जैसे सेना और नौकरशाही का आधुनिकीकरण और कल्याणकारी कार्यक्रम भी शुरू कर सकता है, लेकिन प्राथमिक उद्देश्य राजवंशीय शासन को ही बनाये रखना होता है।

ii) अधिनायकवादी अल्पतंत्र

इस प्रकार की राजनीति का असर समाज में गहरा होता है। सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग के हाथों में शक्ति का उच्च स्तर केन्दित होता है और सामाजिक गतिशीलता की उच्च गति भी समाहित होती है। चीनी शासन इस प्रकार के अलपतंत्र का एक अच्छा उदाहरण है।

iii) अल्पतंत्र का आधुनिकीकरण

इस प्रकार की शासन व्यवस्था में राजनैतिक प्रकार्य सत्तारूढ़ गुट और नौकरशाही में केंद्रित होती है और यहीं इसकी विशेषता भी है। यहाँ प्रतिस्पर्धी राजनैतिक दलों की अनुपस्थिति भी होती है। संघों और हित समूह सीमित गतिविधि के साथ मौजूद होते हैं। सरकार द्वारा मीडिया को नियंत्रित किया जाता है। आमतौर पर सत्तारूढ़ दल अभिजात वर्ग विकास और आधुनिकीकरण के लिए प्रतिबद्ध होता है। लैटिन अमेरिकी राज्यों में से कुछ राज्य इसके उदाहरण हैं ।

iv) संरक्षात्मक लोकतंत्र

इस प्रणाली की प्रमुख विशेषता यह है कि इसने लोकतंत्र, औपचारिक मताधिकार, संघ की स्वतंत्रता और भाषण के साथ–साथ लोकतंत्र के संरचनात्मक स्वरूपों के औपचारिक मानदंडों को स्वीकार किया है। लेकिन कार्यपालिका और नौकरशाही में के भीतर ही शक्ति केंद्रित होती है। विधायिका अपेक्षाकृत शक्तिहीन होती है और न्यायपालिका हमेशा हस्तक्षेप से मुक्त नहीं होती है। कार्यपालिका लोकतंत्र को टुकड़ों में स्थापित करना चाहती है। यहाँ पर धारणा यह होता है कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए लोग अभी परिपक्व नहीं हैं, अतः राजनैतिक व्यवस्था रास्ते से भटक सकती है और अस्थिर भी हो सकती है। 1988 के अंत तक पाकिस्तान इस प्रणाली का सबसे अच्छा उदाहरण था।

v) राजनैतिक लोकतंत्र

ये ऐसी प्रणालियाँ हैं जो स्वायत्त अधिकारियों, विधायिकाओं और न्यायपालिका के साथ कार्य करती हैं। राजनैतिक दल और मीडिया स्वतंत्र और प्रतिस्पर्धी होते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था में स्वायत्त हित समूह और दबाव समूह होते हैं। उदाहरण के तौर पर यू एस ए और यू के जैसे राष्ट्र हैं। भारत जैसे कुछ विकासशील देश भी इसी प्रकार के राजनीतिक प्रणालियों के उदाहरण हैं जो उस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

जैसा कि पहले बताया गया था, पांचों राजनैतिक प्रणालियों में राजनैतिक संरचनाएं काफी अलग–अलग होंगी। राजनैतिक लोकतंत्रों में राज्य के तीन अंगों जैसे कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के पास पर्याप्त स्वायत्तता होता है लेकिन राजनैतिक दल और मीडिया अपेक्षा.त स्वतंत्र और प्रतिस्पर्धी भी होते हैं। अधिकांश मामलों में, एक लिखित संविधान होगा जो इन तीनों निकायों की शक्तियों और कर्तव्यों को भी परिभाषित करता है। अन्य सभी राजनैतिक प्रणालियों में या तो इन निकायों के लिए कोई स्वायत्तता नहीं होती है, या जब स्वायत्तता मौजूद होती है तो सीमित मात्रा में होती है। गैर–सरकारी संरचनाओं को भी शासकों की इच्छा के अनुरूप चलाना होता है।

बोध प्रश्न 1

1) राजनीतिक प्रणाली के प्रमुख तत्वों का संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) राजनीतिक संरचनाओं की प्रमुख श्रेणियों का नामः

ए)

बी)

सी)

डी)

ई)

3) लोकतंत्र में कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका स्वायत्त होता है।

हाँ/नही

4) पारंपरिक अल्पतंत्र में नौकरशाहों का चयन योग्यता के आधार पर किया जाता है।

हाँ/नही

5) भारत एक संरक्षात्मक लोकतंत्र का एक उदाहरण है।

हाँ/नही

9.4 लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली का प्रकार्य

आमतौर पर राजनैतिक प्रणाली कुछ अच्छी तरह से परिभाषित प्रकार्य करती है। एक राजनैतिक प्रणाली के प्रमुख प्रकार्यों को दो व्यापक आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता हैः अंतर्गामी प्रकार्य और बहिर्गामी प्रकार्य।

i) राजनैतिक समाजीकरण और नियुक्ति

ii) हित व्यक्त करना (Interest articulation)

iii) हित संघनन (Interest aggregation)

iv) राजनैतिक सम्प्रेषण

बहिर्गामी प्रकार्यः

v) नियम बनाना

vi) नियम लागू करना

vii) नियम का अधिनिर्णय

दरअसल, एक ओर जहाँ, अंतर्गामी प्रकार्य (इनपुट फंक्शन) का पहला (समुच्चय सेट) गैर–सरकारी उप–प्रणालियों में परिलक्षित होता है वहीं दूसरी ओर बहिर्गामी प्रकार्य (output function) का दूसरा गुट (set) सरकारी उप–प्रणालियों में परिलक्षित होता है।

9.4.1 राजनैतिक समाजीकरण और नियुक्ति

राजनैतिक समाजीकरण एक व्यक्ति को राजनैतिक संस्कृति में शामिल करने की प्रक्रिया है। यह सामान्य समाजीकरण का एक हिस्सा है लेकिन इसका केंद्र बिंदु और उद्देश्य अलग–अलग संदर्भ में होता है। सामान्य समाजीकरण के विपरीत राजनैतिक समाजीकरण बचपन के बाद से प्रारम्भ होता है। राजनैतिक समाजीकरण के दो मुख्य घटक हैं। प्रथम, राजनैतिक व्यवहार और राजनैतिक मामलों से संबंधित सामान्य मूल्यों और मानदंडों का अंतर्निवेशन होना है और दूसरा व्यक्ति को किसी विशेष राजनैतिक पार्टी में शामिल कराना और पार्टी की विचारधारा के साथ–साथ और उससे संबंधित कार्यक्रमों से उसे अवगत कराना होता है।

पहला सामान्य कार्य शैक्षणिक प्रणाली और राज्य की अन्य एजेंसियों द्वारा किया जाता है। दूसरा कार्य विभिन्न राजनैतिक दलों द्वारा किया जाता है। लोकतांत्रिक देशों में और जो लोग लोकतांत्रिक मॉडल को अपनाते हैं उनके लिए राजनैतिक समाजीकरण के दो घटक अलग–अलग होते हैं। पहला उद्देश्य कुछ सामान्य समझ पर आधारित होना चाहिए जैसे कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं, जबकि दूसरा लक्ष्य पार्टी के अनुसार अलग–अलग हो सकता है। अल्पतंत्र में समाजीकरण के एजेंसियां कमोबेश एक जैसी ही होती हैं। सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग जनता की राजनैतिक शिक्षा को इस तरीके से लागू करता है जिससे उनकी अभिजन शक्ति का नाश नहीं हों और जनता भी प्रभावित हों। सत्तारूढ़ अभिजन वर्ग की यह प्रवृत्ति अपने हित में होती है। इस प्रकार, जो सिद्धांत अग्रेषित किया जाता है उससे अभिजन सत्ताधारी वर्ग की छवि अच्छी दिखाई देती है।

राजनैतिक समाजीकरण का एक अन्य पहलू गैर–राजनैतिक उप–प्रणालियों के भीतर होने वाला समाजीकरण का है, जो अक्सर राजनीति में प्रवेश करते हैं। ये प्रजातीय, धार्मिक, भाषाई और अन्य विशिष्ट संगठन हैं जो सदस्यों की आंतरिक भावनाओं से खेलते हैं और अपनी विचारधारा को लागू करने के लिए राजनीति में या तो प्रवेश करते है या प्रयास करते हैं। दरअसल, वे एक समाज के सुचारू राजनैतिक विकास के लिए खतरा होते हैं, लेकिन वे लोग ही दुनिया भर में महत्व हासिल कर रहे हैं, जिनका सामना करना कठिन है। विकासशील समाजों में ऐसा अधिक होता है जहाँ इस तरह के सिद्धांत का उपयोग चतुर राजनेताओं द्वारा जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

राजनैतिक नियुक्ति का अर्थ है–राजनैतिक क्षेत्रों और राजनैतिक भूमिका में नियुक्ति का तय होना। एक आधुनिक राजनैतिक प्रणाली में सभी नागरिक राजनैतिक प्रक्रिया में शामिल होते हैं और यहां तक कि जब वे किसी भी राजनैतिक पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता नहीं होकर भी वे राजनैतिक रूप से इसमें भाग लेते हैं। अल्पतंत्रीय राजनैतिक व्यवस्था में चुनाव केवल एक औपचारिक पद्धति हो सकता है, यहां तक कि नागरिक को चुनाव से जुड़ी प्रक्रियाओं से गुजरना होता है जिसमें सभी प्रकार के राजनैतिक अधिस्वर शामिल होते हैं। इसी प्रकार से समाज के सभी व्यक्ति का राजनैतिक समाजीकरण भी होता है, और राजनैतिक भूमिकाओं और प्राधिकरणों में वास्तविक नियुक्ति केवल उन लोगों तक सीमित होगी जो अर्हता प्राप्त करते हैं। यह अपरिहार्य है, क्योंकि सामान्य समाजीकरण भी स्वयं इस तरह की कार्य–पद्धति का अनुसरण करता है।

राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश करने वालों के लिए सामाजिक आधार व्यापक या संकीर्ण हो सकता है। अरब देशों में यह आधार संकीर्ण, पितृसत्तात्मक और अल्पतंत्रीय है, जबकि भारत में यह आधार व्यापक और प्रतिस्पर्धी है। पहली श्रेणी में, नेताओं को उस सामाजिक समूहों से नियुक्त किया जाता है जो ऐतिहासिक रूप से प्रमुख वर्ग जैसे धनी और कुलीन

परिवार वर्ग से जुड़े होते हैं। अन्य श्रेणियों में जैसे कि सिविल सेवक, सेना के अधिकारी और पेशेवर–व्यावसायिक समूह के साथ–साथ शहरी शिक्षित वर्ग से आते हैं। पितृसत्तात्मक समाजों में व्यावसायिक और व्यावसायिक अभिजात वर्ग और अन्य आधुनिक समूह बड़े पैमाने पर गैर–प्रतिभागी होते हैं, लेकिन उनका आधुनिकीकरण होने से राजनैतिक क्षेत्र में अब वे भी प्रतिस्पर्धी बनते जा रहे हैं। सामाजिक परिवर्तन के कारण पारंपरिक तत्व अब पीछे छूट रहा है और ये समूह भी आगे आने के लिए सक्षम हो रहे हैं।

व्यापक आधार वाले समाज को राजनैतिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा के द्वारा चिन्हित होते हैं, लेकिन ज्यादातर शहरी व शिक्षित मध्यम वर्ग के व्यक्ति ही राजनीति की ओर तेजी से आकर्षित होते हैं और यह वे लोग हैं जो राजनैतिक दलों में नियुक्ति के लिए संभावित अपेक्षाओं के अनुरूप होते हैं। प्रतिस्पर्धा सामाजिक गतिशीलता विशेषता है और सामाजिक परिवर्तन का एक भाग है, यह संतुलन को बिगाड़ सकती है ताकि गैर–मध्यम वर्ग के व्यक्तियों के लिए राजनीति में शामिल होना भी अब संभव हो रहा है।

9.4.2 हित अभिव्यक्ति

हित अभिव्यक्ति का अर्थ सरकार के ध्यानाकर्षण के लिए एक राजनैतिक प्रणाली में अपने हितों की अभिव्यक्ति है। सभी राजनैतिक प्रणालियों में नागरिकों की जरूरतों और समस्याओं को राज्य के द्वारा ध्यान रखा जाता है। आधुनिक समाजों की जटिल और अन्योन्याश्रित प्रकृति के कारण व्यक्तियों की छोटी समस्याएं भी बहुत ही प्रभावी हो सकती हैं और इतना ही नहीं बल्कि कहीं और स्थित एजेंसी द्वारा उनके समाधान की आवश्यकता भी हो सकती है। किसी व्यक्ति की कई समस्याएं उसके नियंत्रण से बाहर भी हो सकती हैं और उनके समाधान के लिए राज्य के द्वारा मदद की जरूरत भी हो सकती है। कई बार समस्याएं राजनैतिक नहीं हों फिर भी समाधान के लिए राजनैतिक (राज्य) के द्वारा कार्रवाई की आवश्यकता हो सकती है। हालाँकि, समस्या के हल की आवश्यकता के लिए, इसे व्यक्त करना होगा। आमतौर पर चूंकि निर्णय लेने वाली एजेंसियों द्वारा व्यक्तिगत मांगों को सुनना या हल करना मुश्किल होता है, तब उन्हें सामूहिक रूप से व्यक्त करना भी जरूरी होता है और जिन लोगों की समस्याएं एकसमान होती हैं वे लोग एक साथ जुड़ भी जाते हैं। उनकी अभिव्यक्ति के तरीके के आधार पर उन्हें संस्थागत हित समूहों, साहचर्य हित समूहों, गैर–सहयोगी हित समूहों और आर्थिक समूहों में विभाजित किया जा सकता है।

9.4.2.1 संस्थागत हित समूह

चर्च, नौकरशाही, सेना और विधायिका आदि विधिवत रूप से स्थिर और संस्थागत ढांचे के स्वरूप होते हैं। यद्यपि उनके आधिकारिक कार्यों का स्वरूप स्पष्ट होता है और इनके बीच एक सक्रिय समूह भी होता है जो सुधार या सामाजिक न्याय जैसे कार्यों में संलग्न होता है और इतना ही नहीं बल्कि इनके विचारों को प्रसारित करने के लिए औपचारिक संरचना का प्रयोग भी करता है जो निर्देशित कार्यों की श्रेणी में नहीं आता है। कई विकासशील देशों में नौकरशाही या सेना में कुलीन–अभिजन वर्ग या गरीब या दलितों के हितों के प्रश्नों को उठाया जा सकता है।

9.4.2.2 संगठनात्मक हित समूह

इसके उदाहरण हैं– व्यापार संघों, प्रबंधकों, व्यापारियों और व्यापारियों के संघों और गैर–आर्थिक गतिविधियों और प्रजातीय, सांस्कृतिक और धार्मिक समूहों या नागरिक समूहों, युवा संगठनों आदि। ये सभी विभिन्न प्रकार की संगठनात्मक हित समूह हैं। इन

संस्थानों के पास हितों के मांग हेतु स्वयं की स्थापित प्रक्रियाएं होती हैं और अन्य राजनैतिक संरचनाओं जैसे कि राजनैतिक दलों, विधानसभाओं, नौकरशाहों, आदि संस्थानों में मांगों को पहुँचाने के लिए एक प्रकार से माध्यम का कार्य करती है। अधिकांश विकासशील देशों में यह देखा गया है की इस प्रकार के संघों का राजनैतिक झुकाव भी स्पष्ट होता है और इन संघों में व्यापार संघ और युवा संगठन भी शामिल होते हैं। वास्तव में ये राजनैतिक दलों के एक प्रकार के मुखौटा होते हैं। हालांकि, इन संघों या संगठनों की विशेष विशेषता यह है कि इनके लक्ष्य और साधन भी निश्चित होते हैं।

9.4.2.3 गैर–संगठनात्मक हित समूह

ये ऐसे समूह हैं जो औपचारिक रूप से स्थापित नहीं होते हैं, लेकिन फिर भी उनकी जाति या धार्मिक या पारिवारिक पदों के कारण महत्वपूर्ण होते हैं। किसी समस्या के बारे में संबंधित अधिकारी या मंत्री से मिलने के लिए एक अनौपचारिक प्रतिनिधिमंडल का गठन किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, एक निश्चित शुल्क के संग्रह से संबंधित या सरकारी नियम में परिवर्तन आदि। यह जरूरी नहीं है कि हितों की अभिव्यक्ति हेतु एक प्रतिनिधिमंडल के माध्यम से ही व्यक्त किया गया हो। यह भी संभव है कि एक औपचारिक या अनौपचारिक रूप से, एक समूह का प्रवक्ता अधिकारी के समक्ष अपनी शिकायतों को उठा सकें। किसी भी रूप में वह अवसर मांगों की अभिव्यक्ति के उद्देश्य को पूर्ण करता है।

9.4.2.4 अनियोजित हित समूह

ये ऐसे समूह हैं जो यकायक या अचानक बनते हैं और अपेक्षाकृत अस्थिर और अल्पकालिक होते हैं, जैसे कि दंगा या प्रदर्शन। यहां हम हिंसक राजनैतिक प्रदर्शनों को शामिल नहीं करते हैं। कई बार रैलियों में ताकत दिखाने और राजनैतिक दलों और उनके समर्थकों के द्वारा किये गए मार्च को भी शामिल नहीं करते हैं। इस समूहों में अल्पकालिक उद्देश्य वाले समूह को ही शामिल किया जा सकता है क्यूँकि इनके अभिव्यक्ति के तरीके अप्रभावी होते हैं। कभी–कभी ये अपेक्षाकृत लंबी अवधि के लिए स्थिर होते हैं तो इस स्थिति में वे संघ बन जाएंगे।

9.4.3 हित समुच्चयन

हित समुच्चयन का अर्थ है कि विभिन्न प्रकार के हित समूहों द्वारा अभिव्यक्त की गई मांगों की छटनी कर एकत्रीकरण करना है। हित समुच्चयन सामान्य नीतियों के निर्माण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, और जिसमें हितों को संयुक्त रूप से समायोजित किया जाता है। यह राजनैतिक दलों द्वारा या सत्ताधारी अभिजात वर्ग द्वारा या सरकार द्वारा ही किया जा सकता है। यह भी संभव है कि हित संबंधी एजेंसियां स्वयं इन हितों को एकत्रित करें और उन्हें नीति निर्माताओं के समक्ष प्रस्तुत करें। यह उदाहरण दिया जा सकता है कि समाज में महिलाओं की निम्न स्थिति से संबंधित मुद्दों को महिलाओं के संगठनों द्वारा उठाया गया और इन संगठनों के द्वारा सरकार पर महिलाओं के विकास हेतु नीतियों को बनाने के लिए दबाव डाला गया। हालांकि, सरकार ने इस मुद्दे की प्रांसगिकता को समझते हुए महिला विकास के लिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना तैयार किया। जिन समाजों में राजनैतिक प्रकार्यों को स्पष्ट रूप से विभाजित नहीं किया गया है, वहां हितों की अभिव्यक्ति और उनका समुच्ययन आम तौर पर संयोजित किया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कार्यों को पर्याप्त रूप से विशेषीकरण नहीं किया गया है। जैसे–जैसे राजनैतिक प्रकार्य विकसित होते हैं, वैसे–वैसे समुच्ययन और अभिव्यक्ति के कार्य भी विभाजित होते जाते हैं। आधुनिक समाजों में राष्ट्रीय स्तर पर संघों ने स्थानीय इकाइयों

की मांगों को एकत्रित करके, और उन्हें विचार के लिए आधिकारिक निकाय के सामने पेश करते हैं। यहाँ ये शीर्ष निकाय हित अभिव्यक्ति के साथ–साथ हित समुच्चयन के रूप में भी कार्य करते हैं। हालांकि, यह याद रखना होगा कि दोनों का कार्य अलग–अलग है। पहला हित की अभिव्यक्ति है, जबकि दूसरा कार्यान्वयन के रूप में विभिन्न हितों का संयोजन है।

दरअसल, समुच्चयन के प्रकार्यों को राजव्यवस्था के भीतर अन्य प्रणालियों द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। इस प्रकार, संस्थाएं और संघ अपनी मांगों को स्पष्ट कर सकते हैं, और उन्हें एक संगठित रूप में रख सकते हैं और उन्हें राजनैतिक प्रणाली में प्रस्तुत कर सकते हैं। यहां तक कि वे व्यक्तियों और समूहों की मांगों को उठाते हैं और उन्हें अपने घोषणापत्र में शामिल करते हैं। वैकल्पिक रूप से, ऐसी राजनैतिक प्रणाली में, एक–दूसरे के साथ सहानुभूति रखने वाले राजनैतिक दलों को कार्यवाही के लिए उनकी मांगों को एकत्र करने में मदद मिलती है।

कई बार संघों द्वारा मांगी गयी मांगों को स्वीकार करना सरकार के लिए मुश्किल हो जाता है। हमारे अपने देश में ऐसे कई उदाहरण देखे जा सकते हैं। स्पष्ट रूप से यह देखा जा सकता है कि स्वतंत्र व्यापार संघों (ट्रेड यूनियन) के द्वारा सत्ता में राजनैतिक पार्टी के साथ श्रम मोर्चों के साथ खुद को जोड़ते हैं तो कुछ व्यापार संघों (ट्रेड यूनियनों) का अपना राजनैतिक झुकाव भी होता है और वे सत्ताधारी पार्टी के करीब भी होते हैं। हित समुच्चयन राजनैतिक प्रणाली में एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह समूह अलग–अलग रूप से सक्षम भी होते हैं और कई मामलों में परस्पर विरोधी मांगों को हल करने हेतु कई बार मांगों के एकल सेट में या विभिन्न सेटों में समेकित करने योग्य बनाते हैं, जो कि व्यावहारिक भी है और इसी कारण राजनैतिक प्राधिकरण उन्हें गंभीरता से लेता भी है। बहुदलीय व्यवस्था में जहां पार्टियों के बीच प्रतिस्पर्धा होती है, वहां सभी महत्वपूर्ण मांगों का ध्यान रखा जाता है।

किसी भी राजनैतिक प्रणाली में जहां एक प्रभुत्वशाली पार्टी होती है और छोटे–छोटे विपक्षी दल हों, वहां हित समुच्ययन एक मुश्किल काम है। पार्टी के भीतर अगर पारंपरिक तत्व मजबूत हों तो आधुनिकीकरण के प्रयासों का विरोध होता है। ऐसा ही पारंपरिक तत्वों के कमजोर या अस्तित्वहीन होने पर भी होगा किन्तु लोगों के बीच विषमता मजबूत होती है। इस प्रकार, ऐसी जनसंख्या वाला एक समाज जो प्रजातीय, भाषाई और सांप्रदायिक रेखाओं में विभाजित हों तो प्रमुख राजनैतिक दल के लिए समाजिक समूहों के हितों को एकत्र करना एक बड़ी समस्या है। उस स्थिति में, पार्टी सामंजस्य मुसीबत में आ जाता है। ऐसी स्थिति में पार्टी के भीतर विभाजन भी हो सकता और नए दलों का निर्माण भी हो सकता है। उसके बाद भी यह हितों के बेहतर समुच्ययन को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। दूसरी ओर, यह एक और उपव्यवस्था (उदाहरण के लिए नौकरशाही) के हाथों को मजबूत करेगा, जिसकी ओर हित समूह अपने हितों के लिए मदद मांगने के लिए उन्मुख होते हैं।

9.4.4 राजनैतिक सम्प्रेषण

सम्प्रेषण किसी भी सामाजिक व्यवस्था का जीवन–रक्त होता है। संचार के माध्यम से ही अन्तः वैयक्तिक संबंध के साथ–साथ बौद्धिक जन मानस संबंध बनाए जाते हैं। किसी भी राजनैतिक प्रणाली में भी यह समान रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि सभी प्रकार के राजनैतिक कार्य जैसे–समाजीकरण, नियुक्ति, अभिव्यक्ति, समुच्ययन और पूरे नियम निर्माण, प्रवर्तन और अधिनिर्णयन की प्रक्रिया संप्रेषण पर निर्भर होती हैं। सूचना जो किसी भी तर्कसंगत कार्रवाई में एक आवश्यक साधन होता है, सम्प्रेषण के माध्यम से ही सुलभ होती है। फिर

भी यह संचार का साधन ही है जो राजनैतिक प्रणाली को कुशलतापूर्वक और जिम्मेदार तरीके से काम को अंजाम देता है।

एक स्वायत्त, तटस्थ और पूरी तरह से प्रभावी संचार प्रणाली सक्रिय और सशक्त मतदाता और नागरिकता के विकास और रखरखाव के लिए आवश्यक है। यह एक परिपक्व लोकतंत्र में ही संभव है। विकासशील देशों में संचार के कई साधनों, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (रेडियो और टेलीविजन) को सरकार नियंत्रित करती है। इन देशों में, प्रेस को हित समूहों द्वारा नियंत्रित किया जाता है ताकि इससे निकलने वाली जानकारी चयनित और पक्षपाती हों। कम साक्षरता स्तर और परिवहन के खराब साधन के कारण समाचार पत्रों और अन्य प्रिंट मीडिया के प्रसार को प्रतिबंधित किया जाता है जबकि गरीबी के कारण रेडियो और टेलीविजन के माध्यम से संचार के प्रसार का प्रतिबंधित हो जाता है। कई आधुनिक राजनैतिक प्रणालियों में, राजनैतिक दल अपने अनुयायियों को शिक्षित और सूचित करने के लिए अपने स्वयं के समाचार पत्र चलाते हैं लेकिन उनके माध्यम से जो जानकारी आती है वो भी उनके द्वारा चुनी हुई होती है।

यहां तक कि आधुनिक समाज में भी जहां जन–संचार माध्यमों की व्यापक पैठ होती है, वहां भी व्यक्ति–से–व्यक्ति में संप्रेषण की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। विकासशील समाजों में, राय बनाने वाले और अभिजन लोग उपलब्ध सूचनाओं की जांच करने और वांछित अन्य अनुयायियों को पालन करवाने में कामयाब हो जाते हैं। यह एक कारण है कि भारत सरकार भी परिवार कल्याण कार्यक्रमों में मदद करने के लिए सरकार नेताओं का समर्थन चाहती है। विकासशील देशों में राजनैतिक दलों ने ग्रामीण जनता तक पहुँचने में व्यक्ति–से–व्यक्ति के बीच सम्प्रेषण का साधन अपनाया है और जो निरक्षर हैं और जो बड़े पैमाने पर मीडिया से दूर हैं उनके लिए उपयोगी रहा है।

आधुनिक समाजों में राजनैतिक सूचना जो सरकार से लोगों तक पहुँचती है वह परिमाण में नागरिक द्वारा सरकार को संप्रेषित सूचना से बहुत अधिक होती है। इसलिए सरकार संचार नेटवर्क का व्यापक उपयोग करती है चाहे वह सरकार द्वारा नियंत्रित हो या समाचार पत्रों द्वारा नियंत्रित इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, या नौकरशाही के माध्यम से परिपत्रों और आदेशों के रूप में भेजे गए आधिकारिक पत्र हों।

9.4.5 सरकारी प्रकार्य

आधुनिक सरकारों के सभी प्रकार्यों के अंतर्गत सरकारी प्रकार्यों को मुख्य रूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है। वे हैं: नियम बनाना, नियम का परवर्तन और नियम का अधिनिर्णय।

आधुनिक राजनैतिक प्रणालियों का एक गुण सरकारी कार्यों में विशेषता बढ़ाने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार, नियम बनाना ज्यादातर विधायिका के द्वारा किया जाता है और अंशतः कार्यपालिका के द्वारा किया जाता है, जबकि नियम प्रवर्तन कार्यपालिका द्वारा नौकरशाही की मदद से किया जाता है। न्याय का निर्णय न्यायपालिका द्वारा किया जाता है, जो कि आधुनिक देशों में, कार्यपालिका विधायिका से मुक्त होती है। हालांकि, दो ऐसे कारक हैं जो इस स्थिति में अंतर पैदा करते हैं। अधिकांश आधुनिक समाजों में, सरकारी कार्यों में औपचारिक और अनौपचारिक व्यवस्था के बीच व्यापक अंतर होता है। औपचारिक व्यवस्था देश के संविधान में सन्निहित होती है, इसलिये यह वास्तविक व्यवहार में इसे कम अपनाया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह सही स्वरूप में किसी राष्ट्र की राजनैतिक संस्कृति और सरकार के स्वरूप पर निर्भर करती है।

सोचें और करें 1

क्या आपको लगता है कि भारत में जन संचार, जिसमें रेडियो, टी वी, समाचार पत्र आदि शामिल हैं, जनता को मतदान करने और एक उपयुक्त सरकार चुनने की राजनैतिक प्रक्रिया में प्रशिक्षित करने में कारगर हैं? ''भारत में राजनैतिक शिक्षा के प्रसार में जनसंचार माध्यमों की भूमिका'' पर दो पृष्ठों की रिपोर्ट लिखें। अपने अध्ययन केंद्र में अन्य शिक्षार्थियों और अपने अकादमिक परामर्शदाता के साथ अपनी रिपोर्ट साझा करें।

बोध प्रश्न 2

1) एक राजनैतिक प्रणाली के प्रमुख कार्यों का संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) एक राजनैतिक प्रणाली के प्रमुख हित समूहों का नाम बताइए।

ए)

बी)

सी)

डी)

इ)

3) राजनैतिक समाजीकरण किसी व्यक्ति को समाज की राजनैतिक प्रणाली में शामिल होने की प्रक्रिया है।

हाँ नहीं

4) बच्चे के जन्म के साथ ही राजनैतिक समाजीकरण शुरू हो जाता है।

हाँ नहीं

5) सरकार के कार्यों का संक्षेप में वर्णन करें।

9.5 राजनैतिक प्रक्रियाएँ

राजनैतिक प्रणाली के भीतर और राजनैतिक प्रणालियों के बीच होने वाले क्रियाकलाप को राजनैतिक प्रक्रिया कहा जाता है। इसमें व्यक्ति और राज्य के अंतर्गत आने वाले अभिकरण जैसे कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका, नौकरशाही, राजनैतिक दल, संचार माध्यम और राज्य के भीतर अन्य एजेंसियां भी शामिल होते हैं। हित समूह की गतिविधियाँ राजनैतिक निर्णयों को प्रभावित करती हैं, वे भी राजनैतिक प्रणाली का ही हिस्सा होते हैं। राजनैतिक संरचना के प्रकार के आधार पर ये प्रक्रियाएँ अलग–अलग होती हैं। लोकतंत्र में, उदाहरण के लिए, कार्यपालिका विधायिका के लिए जिम्मेदार होगी, कानून बनाना विधायिका की जिम्मेदारी होगी और अदालतें कार्यपालिका या शासक समूह के हस्तक्षेप के

बिना कार्य करेंगी। राजनैतिक दल और जनसंचार माध्यम बड़ी स्वतंत्रता के साथ कार्य करते हैं और समाज में भीतर तक गहरी पैठ भी बनाते हैं। दूसरी ओर, नियंत्रित या निर्देशित लोकतंत्र में, स्वतन्त्रता प्रतिबंधित होती हैं जबकि पूर्ण लोकतंत्र में ऐसा नहीं होता है। अलग–अलग एजेंसियां मौजूदा हो सकती हैं, लेकिन सत्ताधारी कुलीन वर्ग की, या अधिक बार, एक शासक के द्वारा नियंत्रित की होंगीं। तीनों प्रकार के अल्पतंत्र भी विभिन्न राजनैतिक प्रक्रियाओं को प्रतिबिंबित करते हैं। एक अधिनायकवादी राज्य में, उदाहरण के लिए, कार्यपालिका, विधानपालिका और न्यायपालिका के कार्यों के बीच बहुत अंतर नहीं होता है। सभी एक साथ शासक समूह या व्यक्ति के हाथों में केंद्रित हो जाते हैं।

9.6 वैधता का आधार

शक्ति का बलपूर्वक उपयोग करना किसी राज्य की विशिष्ट पहचान होती है। इसका अर्थ यह है कि राज्य के पास प्राधिकार है कि वह अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले व्यक्तियों और संगठनों को अपने प्राधिकार को स्वीकार करने के लिए बाध्य कर सकता है और सभी प्रकार के दंडों को भी लागू कर सकता है, जिसमें कारावास और मौत की सजा भी शामिल होता है। व्यक्तियों और संगठनों को राज्य के प्राधिकार को स्वीकार करना होता है। यह राज्य को अंतिम प्राधिकारी की शक्ति से युक्त भी करता है। यह सदस्यों पर किसी भी सजा को अधि.त कर सकता है। इस प्रकार यह अंतिम सत्ताधिकारी भी होता है। अन्यथा नागरिक अपने आप को कानूनी रूप से या नैतिक रूप से भी उनके प्राधिकार को मानने के लिए बाध्य नहीं होगें। इस प्रकार की सत्ता के सभी धारक अपनी शक्ति को वैध बनाने के लिए उत्सुक होते हैं। मैक्स वेबर के अनुसार प्राधिकार को वैध बनाने के तीन तरीके हैं। वे हैं : (1) पारंपरिक, (2) करिश्माई और (3) कानूनी–तर्कसंगत।

9.6.1 पारंपरिक और करिश्माई प्राधिकार

पारंपरिक प्राधिकार : यह प्राधिकार प्रथा और रिवाज द्वारा अनुमोदित होता है। प्रारम्भ से ही यह प्राधिकार समाज उपस्थित था और किसी ने अब तक इसे चुनौती नहीं दी है। बच्चों के ऊपर माता–पिता के प्राधिकार और राज्य की जनता के ऊपर राजा का प्राधिकार ऐसे ही दावों पर टिके होते हैं।

करिश्माई प्राधिकार : यह चमत्कार से लिया गया है, अर्थात्, कुछ नेताओं की असाधारण शक्ति उनके अनुयायियों को प्रभावित करने के लिए। इन अनुयायियों के अनुसार, उनके नेता के पास कुछ शक्तियां होती हैं जिससे वह उन्हें एक संकट की स्थिति से बाहर निकालने में सक्षम बनता हैं या उन्हें वह सब देता है जो वे चाहते हैं। वे अपने नेता को एक उद्धारकर्ता के रूप में मानते हैं। एक नेता की ये अतिरिक्त–साधारण शक्ति या उसके द्वारा दावा किया गया या वास्तविक या काल्पनिक हो सकता है, लेकिन अनुयायियों के लिए यह वास्तविक है। अनुयायियों बिना पूछताछ के सभी प्राधिकार सौंपते हैं। महात्मा गांधी, नेताजी और नेपोलियन करिश्माई राजनैतिक नेता थे।

सोचें और करें 2

भारत के कम से कम पाँच करिश्माई नेताओं की सूची बनाएं और ''सामाजिक परिवर्तन के आधार पर करिश्मा'' पर एक निबंध लिखें। अपने साथी समूह के साथ अपने उत्तर पर चर्चा करें।

9.6.2 कानूनी–तर्कसंगत प्राधिकार

कानूनी तर्कसंगत प्राधिकार कानून पर आधारित प्राधिकार होता है। प्राधिकार का उपयोग

करने वाले व्यक्ति को संबंधित कार्यालय के नियमों के अनुसार विधिवत नियुक्त किया जाता है और यह उसे उस कार्यालय में निहित सभी प्राधिकार ों का उपयोग करने का अधिकार होता है। किसी राज्य का राष्ट्रपति या प्रधान मंत्री जो संवैधानिक रूप से स्थापित विधियों के माध्यम से सत्ता में आते हैं, वे देश के वैध शासक हैं और वहां की जनता उन्हें वैध शासक मानते हैं। चूंकि नियम और कानून तर्क पर आधारित होते हैं, इसीलिए वे तर्कसंगत हैं। वास्तव में, कानून को एक तर्क को मूर्तरूप माना जाता है।

9.6.3 आधुनिक राजनैतिक व्यवस्था की वैधता

आधुनिक राजनैतिक प्रणाली कानूनी तर्कसंगत प्राधिकार के आधार पर काम करती है। इस व्यवस्था के अंतर्गत सभी अंग स्थापित नियमों के आधार पर स्पष्ट रूप से सौंपे गए सभी कार्यों का निर्वहन करते हैं और अधिकारियों को कार्यालय में सौपें गए सभी कार्यों को निष्पादित करना होता है। उनके द्वारा जो भी कार्यवाही की जाती हैं उन्हें मानने के लिए प्रभावित व्यक्ति कानूनी रूप से बाध्य है। यदि किसी को कोई शिकायत है कि कोई अधिकारी ने मनमाने ढंग से या उसके कार्यालय में निहित शक्ति से बाह्य काम किया है, तो उसके लिए फिर से कानूनी और संवैधानिक उपाय हैं, यानी वह व्यक्ति अदालत में जा सकता है। लेकिन अगर अदालत यह भी तय करती है कि संबंधित अधिकारी सही है, तो उसे उस निर्णय को स्वीकार करना होगा।

आधुनिक राजनैतिक प्रणालियों में सत्ता को क्रांतियों के द्वारा या तख्तापलट से भी प्राप्त कई उदाहरण मिलते हैं। इन तरीकों को कानून द्वारा स्वीकृति नहीं मिलती है और जो व्यक्ति इन विधियों का उपयोग कर सत्ता में आते हैं, उन्हें वैध शासक नहीं माना जाता है। इसलिए, ये लोग अपनी स्थिति को वैध बनाने के लिए चिंतित भी रहते हैं। वे या तो खुद को करिश्माई शक्ति के द्वारा उनका हितैषी होने का दावा करते हैं और यदि लोगों को विश्वसनीय नहीं लगे तो तो वे वैध साधनों के माध्यम से चुनाव के लिए खड़े होने की पेशकश भी करते हैं ताकि वे सत्ता में आ सकें। लंबे समय में, इनमें से कोई भी नेता सत्ता संभालने के अपने दावे के लिए वैधता के चोरों के बिना अपने को सुरक्षित महसूस नहीं करता है।

बोध प्रश्न 3

1) वैधता प्राधिकार का संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आधुनिक राजनैतिक प्रणाली की वैधता का आधार बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

3) आधुनिक लोकतंत्र में कार्यपालिका विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है।

हाँ नहीं

4) एक नेता का करिश्माई प्राधिकार पारंपरिक नियमों और विनिमयों से लिया गया है।

हाँ नहीं

5) कानूनी–तर्कसंगत प्राधिकार कानून पर आधारित होता है।

हाँ नहीं

9.7 सारांश

राजनैतिक निर्णय लेने में नागरिकों की भागीदारी के लिए प्रदान करने वाली एक राजनैतिक प्रणाली, या तो सीधे या राजनैतिक प्रतिनिधियों के चुनाव के माध्यम से लोकतंत्र के रूप में जानी जाती है। राजनैतिक प्रणाली में पांच तत्वों अर्थात विचारधारा, संरचना, प्रकार्य, प्रक्रिया और वैधता का आधार होता है। विचारधारा एक राजनैतिक प्रणाली के लक्ष्यों और साधनों को परिभाषित करती है। किसी समाज की राजनैतिक संरचना भी प्रचलित विचारधारा से प्रभावित होती है। हालांकि, राजनैतिक संस्कृति के आधार पर किसी समाज की राजनैतिक प्रणाली में निम्न में से कोई भी रूप हो सकता हैः पारंपरिक अल्पतंत्र, आधुनिकतावादी अल्पतंत्र, संरक्षात्मक लोकतंत्र और राजनैतिक लोकतंत्र।

राजनैतिक प्रणाली प्रणालियों के रखरखाव के लिए कुछ प्रकार्य को निष्पादन करना होता है। राजनैतिक प्रणाली के प्रमुख कार्यों में राजनैतिक समाजीकरण और नियुक्ति, हित अभिव्यक्ति, हित समुच्चयन, राजनैतिक सम्प्रेषण, नियम बनाना, नियम लागू करना और नियम का अधिनिर्णय शामिल होता है।

राजनैतिक प्रक्रियाएं जो राजनैतिक प्रणाली के बीच और उनकी परस्पर अंतःक्रिया से निकलती हैं, जो कि राजनैतिक प्रणाली का एक महत्वपूर्ण तत्व होता है। राजनैतिक संरचनाओं के प्रकारों के आधार पर ये प्रक्रियाएं वास्तव में भिन्न होती हैं। राजनैतिक प्राधिकरण को वैध बनाने के तीन विशिष्ट तरीके हैं। ये हैंः i) पारंपरिक ii) करिश्माई और iii) तर्कसंगत–कानूनी। आधुनिक राजनैतिक प्रणाली एक तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार पर आधारित है। यहां लोग सरकार के द्वारा स्थापित नियमों और कानूनों के आधार पर सरकार के पद को धारण करते हैं और अपने सभी कार्यों का निर्वहन करते हैं।

9.8 प्रमुख शब्दावली

एनोमिक : बिना किसी नियम कानून वाली एक सामाजिक स्थिति।

प्राधिकार : दूसरों पर अपना प्रभाव डालने के लिए किसी की वैध क्षमता। वैधता को पारंपरिक, तर्कसंगत–कानूनी और करिश्माई आधार से प्राप्त किया जा सकता है।

अभिजात वर्ग : वे लोग जिन्होंने अपनी गतिविधि के क्षेत्र में जैसे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, आदि खुद को उत्कृष्ट बनाया है।

तख्तापलट : सैन्य साधनों के माध्यम से सत्ता पर कब्जा करने वाला शासन व्यवस्था। सत्ता पर कब्जा हिंसक भी हो सकता है या नहीं भी भी हो सकता है।

करिश्मा : अनुयायियों को प्रभावित करने के लिए कुछ नेताओं की असाधारण शक्ति।

हित समूह : विशेष रूप से अपने सदस्यों के कुछ सामान्य हितों की प्राप्ति के लिए गठित समूह।

विचारधाराएं : मान्यताओं और प्रतीकों की एक प्रणाली जिससे अनुयायी प्रभावित हों।

आधुनिकीकरण : उच्च प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता की उच्च दर, शहरीकरण, औद्योगीकरण, सामाजिक गतिशीलता, व्यापक संचार की व्यापक पहुंच, और सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में नागरिक की व्यापक भागीदारी के माध्यम से एक आधुनिक राष्ट्र की समग्र सुविधाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया।

शक्ति : दूसरों पर अपना प्रभाव डालने की क्षमता।

संरचना : व्यक्तियों, समूहों, संस्थानों या संगठनों के बीच संबंधों का जाल।

9.9 उपयोगी पुस्तकें

Kornblum, William, 1988. Sociology in a Changing World. Holt, Renehant and Winston Inc. New York (Ch. 16)

Macionis, John J. 1987, Sociology, Prentice Hall: Inc. New Jersey. (Ch. 16 and 17)

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) किसी भी राजनैतिक प्रणाली के सैद्धांतिक तत्व हैं: i) विचारधारा, ii) संरचना, iii) प्रकार्य, iv) प्रक्रिया और v) वैधता का आधार। इन तत्वों का एक विशेष राजनैतिक प्रणाली के अनुरूप सुसंगत अर्थ होता है।

2) ए) पारंपरिक अल्पतंत्र:

   बी) अधिनायकवादी अल्पतंत्र:

   सी) आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर:

   डी) संरक्षात्मक लोकतंत्र: और

   ई) राजनैतिक लोकतंत्र।

3) हाँ

4) नहीं

5) नहीं

बोध प्रश्न 2

1) एक राजनैतिक प्रणाली के द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों को निम्नानुसार सूचीबद्ध किया जा सकता है: राजनैतिक समाजीकरण और नियुक्ति, हित अभिव्यक्ति, हित समुच्चयन, राजनैतिक संचार, नियम बनाना, नियम को लागू करना और नियम का अधिनिर्णयन।

2) ए) संस्थागत हित समूह।

बी) संगठनात्मक हित समूह।

सी) गैर–संगठनात्मक हित समूह और

डी) अनियोजित हित समूह।

3) हाँ

4) नहीं

5) नियम बनाना, नियम का प्रवर्तन और नियम का अधिनिर्णयन सरकार के प्रमुख कार्य हैं। नियम–निर्माण के लिए विधायिका होती है, जबकि नियम प्रवर्तन और नियम अधिनिर्णयन को कार्यपालिका और न्यायपालिका द्वारा देखा जाता है।

बोध प्रश्न 3

1) वैधता प्राधिकार के तीन मुख्य आधार हैंः पारंपरिक आधार, करिश्माई आधार और तर्कसंगत कानूनी आधार। पारंपरिक आधार को किसी समाज के पारंपरिक रीति–रिवाजों और प्रथाओं द्वारा अनुमोदित किया जाता है। नेतृत्व में असाधारण गुण के कारण करिश्माई आधार होता है जबकि तर्कसंगत कानून के द्वारा तर्कसंगत कानूनी आधार का निर्माण होता है।

2) किसी आधुनिक राजनैतिक प्रणाली तर्कसंगत कानूनी प्राधिकार के आधार पर काम करती है। स्थापित नियमों के आधार पर सरकारी कार्यालय में सभी व्यक्ति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। भारतीय राजनैतिक प्रणाली तर्कसंगत कानूनी प्राधिकरण के आधार पर काम करती है।

3) हाँ

4) नहीं

5) हाँ

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY